उज्याऊ

षष्टम अंक

2022

राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र,
देहरादून

गृह–पत्रिका 'उज्याऊ' (षष्टम अंक)

वर्ष 2022

संरक्षक

कर्नल सुमित कुमार द्विवेदी
निदेशक, राष्ट्रीय भू–स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

सम्पादक मण्डल

श्री एम० एन० ढौंडियाल
अधिकारी सर्वेक्षक

श्री एस० एस० रावत
मानचित्रकार श्रेणी–I

श्रीमति सीमा सिंह
वरिष्ठ रिप्रोग्राफर

श्री प्रतीक्ष्य तिवारी
सर्वेक्षक

सम्पादक मंडल का लेखकों के विचारों से सहमत होना अनिवार्य नही है क्योंकि रचनाओं में व्यक्त किये गए विचार लेखकों के निजी विचार हैं।

श्री सुनील कुमार
भा.व.से.
Sunil Kumar
I.F.S.

भारत के महासर्वेक्षक
Surveyor General of India

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
महासर्वेक्षक का कार्यालय,
हाथीबड़कला एस्टेट, पोस्ट बॉक्स नं0 37,
देहरादून –248001 (उत्तराखण्ड), भारत
SURVEY OF INDIA
Surveyor General's Office,
Hathibarkala Estate, Post Box No. – 37,
Dehradun -248001, (Uttarakhand), India

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता व हर्ष की अनुभूति हो रही है कि राष्ट्रीय भू स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, देहरादून गत वर्षों की भांति अपनी निरंतरता को बनाए रखते हुए वार्षिक पत्रिका "उज्याऊ" के छठे अंक का प्रकाशन कर रहा है ।

पत्रिका का प्रकाशन कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की राजभाषा के प्रति निष्ठा व प्रेम को प्रकट करने का सराहनीय प्रयास होने के साथ-साथ राजभाषा के प्रयोग को गति देने में महती भूमिका भी निभाता है । हिन्दी हमारी राजभाषा है और इसके प्रचार व प्रसार में पत्रिकाएं महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती हैं । अतः हिन्दी को बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयास करना हम सबका दायित्व भी है । "उज्याऊ" पत्रिका के माध्यम से कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों की हिन्दी के प्रति प्रतिबद्धता स्वतः ही प्रदर्शित होती है ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन तथा पत्रिका से जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों एवं संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं ।

(सुनील कुमार)
संयुक्त सचिव एवं
भारत के महासर्वेक्षक

Tel: 00 -91-135-2744268/2747051 -58 Extn -5001
E-mail : sgi.soi@gov.in

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
SURVEY OF INDIA

आज़ादी का अमृत महोत्सव

दूरभाष रू 0135 2977976

Telephone : 0135 2977975, 2977980
फैक्स Fax : 0135 2977970
ईमेल E-mail : zone.spl.soi@gov.in

अपर महासर्वेक्षक, विशिष्ट क्षेत्र का कार्यालय
OFFICE OF ADDL SG, SPECIALIZED ZONE

राष्ट्रीय भू-स्थानिंक आंकड़ा केंद्र परिसर

NATIONAL G.D.C. CAMPUS
ब्लॉक 6, हाथीबड़कला, पत्र पेटी सं. 200,
Block 6, Hathibarkala Estate, Post Box No. 200

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि राष्ट्रीय भू–स्थानिक आंकड़ा केन्द्र अपने कार्यालय की वार्षिक हिन्दी पत्रिका "उज्याऊ" के षष्टम अंक का प्रकाशन कर रहा है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार हेतु हिंदी पत्रिका का निरंतर प्रकाशन एक सराहनीय व सार्थक कदम है।

हिन्दी हमारी राजभाषा है और निश्चय ही पत्रिका के प्रकाशन का मूल अभिप्राय हिन्दी के प्रचार–प्रसार के साथ ही अधिकारियों तथा कर्मचारियों की रचनात्मक प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देना भी है। मुझे दृढ़ विश्वास है कि यह पत्रिका अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण एवं सुधी पाठकों में हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग के प्रति आस्था को सुदृढ़ करेगी।

हिन्दी पत्रिका उज्याऊ हमारे देश की विभिन्न संस्कृतियों, कलाओं एवं संप्रदायों को जोड़ने हेतु निश्चय ही सेतु भाषा का कार्य करेगी ऐसा मेरा विश्वास है।

मैं प्रकाशन मंडल के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पत्रिका के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं देता हूँ। आशा है पत्रिका का प्रकाशन अनवरत जारी रहेगा।

सरीन

(ब्रिगेडियर बी० सरीन चंदर)
अपर महासर्वेक्षक,
विशिष्ट क्षेत्र

भारतीय सर्वेक्षण विभाग

SURVEY OF INDIA

दूरभाष/ 0135 2747623
Telephone 0135 2742015
प्रतिकृति/Fax: 91-135-2742971
E-mail: ngdc.soi@gov.in,

राष्ट्रीय भू–स्थानिक आंकड़ा केन्द्र
NATIONAL GEO-SPATIAL DATA CENTRE
ब्लाक 6, हाथीबड़कला एस्टेट, पत्र पेटी सं. 200
Block 6 , Hathibarkala Estate, Post Box No. 200 देहरादून
(उत्तराखंड) Dehra Dun– 248001 (Uttarakhand)

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि रा० भू० स्थानिक आंकड़ा केन्द्र देहरादून हिंदी पत्रिका उज्याऊ के षष्टम अंक का प्रकाशन कर रहा है।

राजभाषा हिंदी देश की सांस्कृतिक विविधता में एकता का प्रतीक तो है ही साथ ही साथ विचारों व भावों के आदान–प्रदान हेतु सरल भाषा है। हमारी राजभाषा के प्रचार व प्रसार के लिए निरन्तर प्रयास करना हम सबका नैतिक दायित्व व संवैधानिक कर्तव्य है। हमारी पत्रिका का प्रकाशन रचनाकारों, लेखकों की रचनाधर्मिता एवं सृजनशीलता को प्रोत्साहित करने हेतु सुदृढ़ मंच प्रदान करता है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित लेख तथा रचनाएं राजभाषा हिंदी के प्रचार व प्रसार में महती भूमिका निभायेंगे।

मैं राष्ट्रीय भू–स्थानिक आंकड़ा केन्द्र देहरादून के सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों का आभारी हूँ जिनके सहयोग से पत्रिका का यह अंक प्रकाशित हो सका है तथा पत्रिका के प्रकाशन में सराहनीय कार्य सम्पादित करने के लिए सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई देता हूँ। पत्रिका के अनवरत प्रकाशन के प्रयास हेतु सभी को मेरी शुभकामनाएं।

सुमित द्विवेदी

कर्नल सुमित कुमार द्विवेदी
निदेशक,
रा० भू० स्थानिक आंकड़ा केन्द्र
देहरादून।

सम्पादकीय

सीमा सिंह
वरिष्ठ रिप्रोग्राफर

राष्ट्रीय भू–स्थानिक आंकड़ा केन्द्र की वार्षिक हिन्दी पत्रिका उज्याऊ के षष्टम अंक आपके हाथों में सौंपते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष और गौरव की अनुभूति हो रही है।

राजभाषा हिंदी निश्चय ही अपने में सरलता लिये एक समृद्ध भाषा है जिसमें विचारों के आदान–प्रदान को सरलता से अन्य तक पहुंचाने का विलक्षण गुण है। शब्दों के द्वारा एक–दूसरे को आत्मसात करना सरल है और राजभाषा हिंदी में अभिव्यक्ति और भी सरल हो जाती है। पत्रिका को हमने हिंदी के प्रति अपने दायित्व और सम्मान को प्रकट करते हुए मनदर्पण रूपी शब्दों से सजाया है। राजभाषा के अधिकाधिक प्रयोग, प्रचार प्रसार हेतु सभी को प्रोत्साहित करना ही पत्रिका का मूल उद्देश्य है एवं मुझे पूर्ण विश्वास है कि पूर्व वर्षों की भांति ही हम इस बार भी अपने इस प्रयास में सफल होंगे।

राष्ट्रीय भू–स्थानिक आंकड़ा केन्द्र के निदेशक एंव पत्रिका के संरक्षक कर्नल सुमित कुमार द्विवेदी जी की मैं विशेष आभारी हूं जिन्होनें पत्रिका के प्रकाशन हेतु अपनी विवेकपूर्ण सलाह एवं मार्गदर्शन सदैव बनाए रखा। सम्पादक मंडल के वरिष्ठ अधिकारी श्री एम0एन0 ढ़ौडियाल, अधिकारी सर्वेक्षक, श्री एस0एस0 रावत, मानचित्रकार श्रेणी–I, एवं प्रतीक्ष्य तिवारी सर्वेक्षक का भी विशेष धन्यवाद जिन्होनें पत्रिका के प्रकाशन हेतु अपना अमूल्य समय प्रदान किया तथा कार्यालय में सभी को रचनांए लिखने व देने हेतु प्रेरित किया। राष्ट्रीय भू–स्थानिक आंकड़ा केन्द्र के हिन्दी अधिकारी श्री अरूण कुमार का भी विशेष आभार जिन्होने पत्रिका के प्रकाशन हेतु हर सम्भव सहयोग दिया।

हम अपने सुधी पाठकों से आशा करते हैं कि सदा की भांति अपने विचारों व सुझावों से हमें प्रोत्साहित करेगें जो भविष्य में पत्रिका को अत्याधिक रोचक व ज्ञानवर्धक बनाने में सहायक सिद्ध होगें।

गृह–पत्रिका 'उज्याऊ' (षष्ठम अंक)–2022

vuØef.kdk

Øe l[;k	Yk[k@dfork	Yk[kd	i`B l[;k
१	मानचित्र– (कविता)	ईश्वर सिंह पुण्डीर, मानचित्रकार श्रेणी–1	7
२	मध्यमहेश्वर यात्रा संस्मरण	विजय भण्डारी, कम्पयूटर टाईपिस्ट	8
३	राष्ट्रभाषा हिन्दीः समस्यायें और समाधान (लेख)	महिमा तेश्वर, पुत्री अरूण कुमार तेश्वर	13
४	ऐ जिदंगी (कविता)	आरती रोहिला, एम•टी•एस•	14
५	साईलेज (पशुओं का चारा) (लेख)	साबर सिंह, वरिष्ठ रिप्रोग्राफर	15
६	बेटी (कविता)	सतेन्द्र सिंह रावत, मानचित्रकार श्रेणी–1	16
७	सोच	एम0एन0 ढ़ौडियाल, अधिकारी सर्वेक्षक	17
८	एक नई शुरूआत– (कहानी)	सीमा सिंह, वरिष्ठ रिप्रोग्राफर	19
९	जिन्दगी (कविता)	हरी सिंह रावत, मानचित्रकार श्रेणी–1	23
१०	विचार	भूपेन्द्र सिहं, सर्वेक्षण सहायक	24
११	आजादी का अमृत महोत्सव व भारतीय सर्वेक्षण विभाग	अजय कुमार, अधिकारी सर्वेक्षक	25
१२	'प्रेम' (कविता)	सुमेघा पोखरियाल, डिजिटाईजर	28
१३	यज्ञ से विविध रोगों की चिकित्सा (लेख)	अरूण कुमार तेश्वर, वरिष्ठ रिप्रोग्राफर	29
१४	यादों की रसधार (कविता)	आकांक्षा चौहान, डिजिटाईजर	29
१५	मूर्खो का डिज्नीलैंड (लेख)	आलोक मिश्रा, सर्वेक्षक	30
१६	'भिखारन' (कविता)	सुमेघा पोखरियाल, डिजिटाईजर	30
१७	सोने की चिड़िया को सोना तोहफा (लेख)	उपदेश कुमारी, सर्वेक्षक	31
१८	पद–स्थ (कविता)	आलोक मिश्रा, सर्वेक्षक	34
१९	विविधता में एकता (लेख)	रोनिका फोगाट, एम0 टी0 एस0	36
२०	1857 की आजादी (कविता)	विजय कुमार, लोकल लेबर	37
२१	सन्नाटा (लेख)	अशोक सिंह, H/O सीमा सिंह	38
२२	मैं कहती हूँ मुझसे आज (कविता)	आरती रोहिला, एम•टी•एस•	42
२३	माँ की ममता (कविता)	किरन पाल, डिजिटाईजर	42
२४	समाज की खूबसूरती में प्रकृति का योगदान (लेख)	पूनम शर्मा, डिजिटाईजर	43
२५	आत्मविश्वास (कविता)	सीमा बिष्ट, डिजिटाईजर	44
२६	आजादी का अमृत महोत्सव (लेख)	भूपेन्द्र सिहं, सर्वेक्षण सहायक	45
२७	माँ (कविता)	सीमा सिंह, वरिष्ठ रिप्रोग्राफर	46
२८	लोकोक्तियाँ व उनके अर्थ	संतोख सिंह अरोड़ा, मानचित्रकार श्रेणी–1	47
२९	उत्तराखण्ड के भौगोलिक संकेतक टैग (लेख)	श्रीजेश बाबू एन० टी०, कार्यालय अधीक्षक	48
३०	आईना (कविता)	अभिनव प्रभाकर, डिजिटाईजर	57
३१	"सर्वे ऑफ इंडिया" एक नये दौर में (कविता)	प्रवीण बिजल्वान, डिजिटाईजर	57
३२	श्री अमरनाथ यात्रा (यात्रा संस्मरण)	अरूण कुमार, अधिकारी सर्वेक्षक	58
३३	अटूट	बलवन्त सिंह, सर्वेक्षण सहायक	61
३४	सामान्य ज्ञान (लेख)	ममता तोमर, वरिष्ठ रिप्रोग्राफर	61

मानचित्र

ईश्वर सिंह पुण्डीर
मानचित्रकार श्रेणी–1

मैं मानचित्र हूँ,
मैं वृहद स्वरूप को सूक्ष्म रूप मे परिवर्तित करने में पारंगत हूँ ।
मैं कला, विज्ञान, इतिहास, भूगोल से परिपूर्ण हूँ।
मैं प्रत्येक भाषा की आकृति की अभिव्यक्ति हूँ।
मैं आकार हूँ, साकार हूँ, निराकार नही,
मैं मानचित्र हूँ,
मुझमें यथार्थ है, स्वार्थ नहीं,
मुझमें अक्षांश है, देशान्तर है तथा निर्देशांक भी हैं,
मुझमें ज्ञान है, विज्ञान है, अज्ञान नही।
मुझमे नीर, धरा, शैल श्रृंखलाओं का समावेश है,
मैं मानचित्र हूँ,
मैं द्विआयामी भी हूँ, त्रिआयामी भी हूँ ,
मैं प्राकृतिक भी हूँ, राजनैतिक भी हूँ ,
मैं भौगोलिक भी हूँ, स्थलाकृतिक भी हूँ ,
मैं वृहत्त भी हूँ सूक्ष्म भी हूँ ,
मैं मानचित्र हूँ ,
मैं सैनिकों का ज्ञान व पथ प्रदर्शक हूँ ,
मैं अध्यापक का अध्यापन हूँ ,
मैं विद्यार्थियों का अध्ययन हूँ ,
मैं सार भी हूँ, संक्षेप भी हूँ ,
मैं मानचित्र हूँ ,
मैं युग परिवर्तन के साथ परिवर्तनशील हूँ ,
मैं गगनचुम्बी इमारतों तथा अट्टालिकाओं का खाका हूँ ,
मैं मूक होकर भी अभिव्यक्ति से परिपूर्ण हूँ ,
मैं आधुनिक प्रौद्योगिकी से परिपूर्ण हूँ ,
मैं मानचित्र हूँ ,
मैं धरती का गौरव व राष्ट्र की शान हूँ ,
मैं कागजी प्रति तथा अंकीय स्वरूप में विद्यमान हूँ ,
मैं मानचित्र हूँ।

राष्ट्रभाषा हिंदी किसी व्यक्ति या प्रांत की सम्पत्ति नहीं है, उस पर सारे देश का अधिकार है।

–सरदार वल्लभ भाई पटेल

अगर किसी देश को भ्रष्टाचार से मुक्त और सुन्दर मन वालों का देश बनाना है तो मेरा दृढतापूर्वक मानना है कि समाज के तीन प्रमुख सदस्य यह कर सकते है, पिता, माता और गुरू।

–डा0 ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम

मध्यमहेश्वर यात्रा संस्मरण

विजय भण्डारी
कम्पयूटर टाईपिस्ट

मध्यमहेश्वर के बारे में कुछ जानकारीः– यह मंदिर उत्तराखंड राज्य के रूद्रप्रयाग जिले में स्थित है तथा भगवान शिव को समर्पित है एवं पंच केदारों में से एक है तथा केदानाथ के बाद द्वितीय नंबर पर आता है, यहाँ भगवान शिव की नाभि की पूजा की जाती है। प्राचीन मान्यता है कि इस मंदिर का निर्माण महाभारत के समय पांडवों के द्वारा किया गया था। मध्यमहेश्वर मंदिर के निर्माण की कथा के अनुसार जब पांडव महाभारत का भीषण युद्ध जीत गए थे तब वे गोत्र हत्या के पाप से मुक्ति पाने के लिए भगवान शिव के पास गए लेकिन वे उनसे बहुत क्रुद्ध थे। इसलिए शिवजी बैल का अवतार लेकर धरती में समाने लगे लेकिन भीम ने उन्हें देख लिया। भीम ने उस बैल को पीछे से पकड़ लिया। इस कारण बैल का पीछे वाला भाग वही रह गया जबकि चार अन्य भाग चार विभिन्न स्थानों पर निकले। इन पाँचों स्थानों पर पांडवों के द्वारा शिवलिंग स्थापित कर शिव मंदिरों का निर्माण किया गया जिन्हे हम पंच केदार कहते हैं।

मध्यमहेश्वर मंदिर में भगवान शिव के बैल रूपी अवतार की नाभि (पेट) प्रकट हुई थी। बैल का जो भाग भीम ने पकड़ लिया था। वहां केदारनाथ मंदिर स्थित हैं। अन्य तीन केदारों में तुंगनाथ (भुजाएं), रूद्रनाथ (मुख) व कल्पेश्वर (जटाएं) आते हैं। मध्यमहेश्वर मंदिर को पंच केदारों में से दूसरे केदार के रूप में जाना जाता है। यह मंदिर समुद्र तल से 3,497मीटर(11,473फीट) की ऊँचाई पर स्थित है। मध्यमहेश्वर में कपाट इस साल 2022 में 19 को बैसाखी को खुले थे।

इस यात्रा संस्मरण के माध्यम से मैं अपने निजी अनुभव आपके साथ सांझा कर रहा हूँ तथा आशा करता हूँ यह जानकारी आपके काम आयेगी। मध्यमहेश्वर जाने का विचार मेरे मन में काफी समय से था परंतु मै समय के अभाव से जा नही पा रहा था। परंतु इस बार जन्माष्टमी शुक्रवार को थी तथा शनिवार एवं रविवार की छुट्टी के साथ ही मुझे 03 दिन का समय मिल गया तथा मैने इस बार हिम्मत कर के इस यात्रा में जाने का निर्णय लिया। तथा शुक्रवार प्रातः 6 बजे मोटर कार से हमारी यात्रा मार्ग देहरादून से अपने निवास स्थान से शुरू कर ऋषिकेश से देवप्रयाग, देवप्रयाग से श्रीनगर, श्रीनगर से रूद्रप्रयाग, रूद्रप्रयाग से ऊखीमठ मार्ग से रांसी गांव 248 किमी0 मोटर मार्ग का सफर कर पहुंचे। क्योकि हम मानसून में जा रहे थे तो बादल तथा वर्षा रास्ते में कही–कही थी तथा उखीमठ से रांसी दूरी 21 किमी है उखीमठ मध्यमहेश्वर का शीतकालिन प्रवास भी है तथा कपाट नवम्बर माह तक बंद हो जाते है तब मध्यमहेशवर के दर्शन यही होते है। उखीमठ और रांसी के बीच हमें काफी वर्षा का सामना करना पड़ा तथा मेरा मित्र इस बात से काफी डरा हुआ था कि कही रास्ता बंद ना हो जाए तथा हम बीच में ना फंस जाऐ तथा उसका डरना स्वाभविक ही था क्योकि बरसात में यह मार्ग काफी जोखिम भरा हो जाता है तथा

मार्ग का धंसना तथा बोल्डर आदि का अचानक आ जाना कोई नई बात नही है तथा इसके चलते कई हादसे होते भी रहते है वर्षा से रास्तों मे जगह जगह पानी भरा हुआ था बरसाती नाले भी आ रखे थे तथा रास्ते में रांसी गांव से 04 किमी पहले मार्ग टूटा हुआ था और काफी संकरा भी हो रखा था तथा वर्षा के चलते उस मार्ग पर कार को चलाना काफी जोखिम भरा था परंतु कार मै चला रहा

था तो मुझे अपने ऊपर पूरा विश्वास था तथा हिम्मत कर के मैने वह मार्ग पार किया तथा जैसे तैसे हम रांसी गांव पहुंचे तथा रात्रि विश्राम हमने यही किया। यहाँ रहने अच्छी व्यवस्था है तथा होम स्टे का चलन अधिक है वही एक होम स्टे में हम रूके। कार को यही पार्क करना उचित था तथा यहाँ से अगले दिन प्रातः मध्यमहेश्वर के लिए पैदल मार्ग तय करना था वैसे तो रोड रांसी से 2 किमी आगे अगतोलीधार तक पक्की रोड बनी है परंतु गाड़ी को गांव में ही पार्क करना सुरक्षित है। तथा अगतोलीधार से मार्ग में कार्य चल रहा है तथा भविष्य में वह आगे के गांव गोंडार तक जाऐगी जोकि रांसी से 06 किमी की दूरी पर हैं।

रात्रि विश्राम कर हम प्रातः जल्दी ही श्री मध्यमहेश्वर के लिए निकलना चाहते थे क्योकि 18 किमी का मार्ग काफी कठिन चढाई पर है, परंतु प्रातः काफी बारिश हो रही थी तथा बारिश के कारण हमें यात्रा के लिए निकलने में देर हो गई तथा 11 बजे बारिश बंद होते ही हम रांसी से नाश्ता कर के पैदल यात्रा पर निकल गये। हमारे साथ बंगाल का एक ग्रुप भी था जिसमें करीब 10 सदस्य थे तथा वो हमसे कुछ जल्दी सफर पर निकल गये थे। मौसम काफी सुहाना था तथा बादलों के बीच से पर्वतों से निकलती जलधारा एक मनमोहक दृश्य प्रस्तुत कर रही थी जिसे मैने कैमरे तथा मोबाईल में कैद कर लिया। कुछ फोटोग्राफी करते करते हम अगतोलीधार पहुंचे। यहाँ तक मार्ग आसान है कोई चढ़ाई नही है परंतु अगतोलीधार के बाद गोंडार गांव के लिए ढलान शुरू हो जाती है तथा जंगल के रास्तों से होते हुए बीच मे कहीं थोड़ी चढाई भी शुरू हो जाती है। हमारे पास काफी सामान भी था जो कि ट्रैकिंग बैग में था जिसका कुल वजन 20 किलो के आस पास था जिसमे एक पैट्रोमैक्स, टैंट तथा कपडे, राशन बर्तन तथा अन्य आवश्यक सामान था।यह बैग आगे हमें काफी भारी पड़ने वाला था इसका अनुमान हमे नही था।तथा मुझे लगा की इस यात्रा के लिए पहले मुझे कुछ शारीरिक व्यायाम करना चाहिए था तो शायद कुछ आसान लगता लेकिन अब क्या फायदा होना था अब तो हम चल दिये थे। तथा मेरी आप को एक राय है कि कृपया वह व्यायाम कर अपने आप को फिट करके ही यह यात्रा करें नही तो आपके लिए यह यात्रा काफी कठिन हो सकती है तथा जो भी शारीरिक रूप से फिट नही है वह यह यात्रा ना करे। यह यात्रा काफी कठिन होने वाली थी क्योकि हमें इस बात का अनुमान नही था कि यह मार्ग में चढ़ाई काफी कठिन थी तथा हमारे पास काफी सामान होने से कठिनाई और बढ़ गई।

अगतोलीधार से गोंडार गांव के मध्य में कई सारे झरने पडते है जो की आपको काफी शीतलता तथा तरोताजा कर देते है तथा आपकी थकान कुछ कम हो जाती है। इस मार्ग के समांतर ही मध्यमहेश्वर गंगा बह रही है जिसकी आवाज काफी तेज है तथा काफी दूर तक सुनाई देती है। इस मार्ग की खास बात यह है कि मार्ग में जगह–जगह पीने का पानी है तथा चलते चलते कई बार आपको प्यास लगेगी तो यह सुविधा से आप को काफी आसानी हो जाती है, वैसे तो पैदल मार्ग मे अपने पास एक पानी की बोतल रखनी चाहिए तथा समय पर उसे भरते रहना चाहिए।

प्रकृति के नजारे देखते हुए हम गोंडर गांव तक का 06 किमी का मार्ग तय कर करीब 1 बजे पहुँचे वहाँ पर पुनः जोरदार बारिश हो गई तथा हमने कुछ देर एक चाय की दुकान में चाय पीते हुए बारिश रूकने का इंतजार किया तथा बारिश कुछ कम हो गई तो हमने अपनी बरसाती को पहन कर आगे की यात्रा पर निकल गये, आगे का पड़ाव था छोटी बनतोली जो की 1 किमी दूर था जहाँ हम 15 मिनट मे पहुच गये तथा यही से मध्यमहेश्वर की चढ़ाई शुरू होने वाली थी जो की हमारी कड़ी परीक्षा लेने वाली थी। भगवान शिव का नाम लेकर हमने चढ़ाई शुरू कर दी धीरे–धीरे हम अपनी मंजिल को चल पड़े आगे कुछ 1 किमी की दूरी पर बड़ी बनतोली गांव था जहाँ हम जल्दी ही पहुँच गये। तथा वहाँ हम नही रूके तथा अगले

पड़ाव खड्डरा के लिए चल पड़े इस बीच हमे एक टीनशेड मिला जहाँ हमने थोड़ा विश्राम किया तथा भूख भी काफी लग गई थी, इसलिए हमने अपने साथ लाई मैगी बनाई जो काफी आसान था तथा सफर मे ज्यादा भारी खाना ना खाना ही उचित रहता है। यहाँ से हम करीब 3 बजे निकल पड़े, तथा खड्डरा तक हम रूक रूक कर पहुंचे कुछ 20 मिनट में हम वहाँ पहुंच गये। वहाँ कुछ होमस्टे तथा वन विभाग का पक्का आवास भी है यदि आप यहाँ रूकना चाहे तो रूक सकते है यह जगह मध्यमहेश्वर मार्ग के ठीक बीच मे है यहां से मार्ग आधा रह जाता है वैसे यहां से अच्छा आप कुछ 2 किलोमिटर आगे नानू मे रूक सकते है वहां मात्र एक होम स्टे है । मैने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि जितना हो सके आप ज्यादा से ज्यादा मार्ग तय कर लें तथा शाम होने तक बीच में कही विश्राम कर लें परंतु हम लोगो का यह विचार था की आज ही हमे मध्यमहेश्वर पहुंचना है यह हमारी जिद् थी परंतु मै आपको ऐसा करने की राय नही दूंगा। हम नानू में करीब 4:15 बजे पहुंच गये तथा वहाँ से थोड़ा पानी बोतल मे भर कर हम आगे के लिए अगले पड़ाव मैखम्बा जो की करीब 2:50 किमी0 है के लिए निकल पड़े तथा वहा पहुंचते–पहुंचते शाम के 6 बज गये थे तथा अब हम काफी थक चुके थे चलते–चलते यहां हमें काफी थकान तथा भूख लग गई थी तो हमने यहां की दुकान के मालिक को आवाज लगाई परंतु वह वहां मौजूद नही था हमें काफी निराशा के साथ अब आगे बढ़ना ही था क्योकि अब अंधेरा होता जा रहा था तथा जंगल और घना होता जा रहा था अब हमने आगे के लिए अपने टॉर्च को निकाल कर धीरे–धीरे बढ चले। रास्ते मे कून चट्टी से कुछ 500 मीटर पहले हमें एक टैंट सा मिला। वह एक काम चलाऊ दुकान चला रहा था जहां पर हमने चाय तथा बिस्कुट खरीद कर खाये तो हमारी जान मे जान आई यहाँ हमे पहुचते हुए 7:30 बज गये थे तथा घने अंधेरे में हिम्मत बांध कर हमने आगे की यात्रा तय की जैसे ही हम कून चट्टी पहुंचे वहां हमें एक दुकान बंद मिली तथा हम कुछ देर रूके तथा आगे के लिए निकल पड़े यहां चढ़ाई और कठिन होती जा रही थी, यहां पर वर्षा शुरू हो गई थी तथा हमने अपनी बरसाती पहनी तथा फिर हम आगे के लिए चल पड़े यहां से मध्यमहेश्वर 2.30 किमी रह गया था तथा यही पड़ाव सबसे कठिन भी अधिक लग रहा था क्योकि हमे लगातार चलते हुए कई घंटे हो गये थे एक बार विचार आ रहा था कि वापिस चले जाए परंतु ऐसा हम नही कर सकते थे क्योंकि हम जंगल के बीच में थे तथा हमारे पास और कोई चारा नही रहा तथा अब हमने हिम्मत करी और यहां से निकल पड़े मध्यमहेश्वर के लिए। अब हमारा धैर्य भी जवाब देने लग गया था तथा हमनें अपना भारी बैग आपस मे बदल कर चलने लगे, वर्षा अब रूक गई थी तथा घंटियों की आवाज आने लगी तो हमारी जान मे जान आई। अब अंततः हम मध्यमहेश्वर पहुंच गये यहाँ पहुंचने में हमें 9.30 बज गये थे तथा थकान के मारे नींद

आ रही थी, हमने रहने के लिए वहां पूछा तथा खाने के लिए भी बोला। वहां मंदिर प्रांगण में ही हमे कमरा मिल गया जहां हमने अपने कपड़े बदले क्योकि कि कपडे पसीने से गीले हो गये थे तथा अब उन कपड़ो

में ठंड लग रही थी। कुछ देर विश्राम करते ही नींद आने ही लगी थी। हमारा खाना तैयार हो गया था। खाना खाने के लिए हमे बाहर जाना था तथा अब बाहर जाने में ठंड लगने लगी थी। हमें चूल्हे पर बनी रोटी तथा दाल चावल खा कर तुरंत ही नींद आ गई तथा सुबह हम 6 बजे उठे। हमने फ्रैश होकर बूढ़ा मध्यमहेश्वर जाने का निर्णय लिया। बूढा मध्यमहेश्वर का मार्ग मध्यमहेश्वर से बाई तरफ को होते हुए करीब 2 किलोमीटर की खड़ी चढ़ाई वाला है तथा बुग्यालों से भरा हुआ है। कहा जाता है यह मध्यमहेश्वर मंदिर का प्राचीन मंदिर है क्योकि यहां पहुंचना काफी कठिन है तथा पानी का स्रोत नही है इसलिए भगवान शिव ने यह मंदिर ऐसी जगह बनवाया जहां पर्याप्त जल हो तथा गंगा माता यहां पर शिव के आग्रह पर यहाँ एक धारा के रूप में प्रकट हुई तथा जल की व्यवस्था हुई जो प्राचीन काल से अभी तक है। मार्ग में एक छोटी सी जल धारा भी है जो यहाँ की जल आपूर्ति करती है तथा मंदिर के पानी का स्रोत है। इस धारा के साथ ही चढ़ाई का मार्ग काफी क्षतिग्रस्त है तथा बरसात के मौसम में फिसलन भरा भी है, परंतु हरियाली तथा फूल काफी दिखाई दे रहे थे। तथा फोटोग्राफी में नजारों को कैद करते हुए हम ऊपर की तरफ बढ़ते चले गये। रास्ते में हमे गायों का झुंड दिखा। यह गाय मध्यमहेश्वर के पास में रहने की थी वह बुग्यालों में घास को चरने के लिए गायों को यहां छोड़ देते है तथा जब घास कुछ कम हो जाती है तो वह गायों को वापस ले आते है। कुछ आगे चलने पर हमे बादलों के पीछे चौखम्बा पर्वत के दर्शन हुए यह पर्वत चार पर्वत शिखरों का बना है जिस कारण इसका नाम चौखम्बा है तथा जिसे देख कर हमारा यहां आने का उद्देश्य पूर्ण हुआ तथा लगा यात्रा अब सफल हुई। कुछ देर देखने के पश्चात् ही बादलों ने फिर से सारा नजारा धुंधला कर दिया तथा हम कुछ फोटोग्राफी के उपरांत ही यहां से आगे बूढा मध्यमहेश्वर के लिए चले। बुग्याल पर कुछ दूरी पर ही हमे बूढा मध्यमहेश्वर दिखाई दिया तथा धुंध अधिक होने के कारण हमे मंदिर के पास के ताल पर जो परछाई दिखनी थी वह नही दिख पाई। कुछ देर दर्शन के बाद ही हम वहां से वापस आ गए तथा मध्यमहेश्वर को वापस निकल पड़े वैसे यहाँ आने का उचित समय सितम्बर माह है उस समय आपको हरियाली भी दिखाई देगी तथा चौखम्बा पर्वत भी स्पष्ट दिखाई देगा। मंदिर में 11 बजे हमने दर्शन कर तथा नाश्ता करने के उपरांत् वापिस रांसी गांव के लिए प्रस्थान किया। तथा रात्रि 8:15 पर हम रांसी गांव पहुंच गये जहां हमने रात्रि रांसी में ही रूक कर यहीं अपने सफर का अंत किया। अगले दिन प्रातः घर के लिए प्रस्थान किया। यह सफर मेरे लिए काफी रोमांचक रहा तथा मैं आप सब से अनुरोध करता हूं कि एक बार यहाँ जरूर आए परंतु थोड़ी तैयारी के साथ तथा आपका यहाँ आना सफल होगा क्यो कि यहाँ के प्राकृतिक नजारे आपके मन को मोह लेंगे तथा आपको एक असीम शांति का अनुभव होगा जो शायद हम अपने जीवन में कहीं खोते जा रहे है। मै अपनी रचना को यही विराम देता हूं। अपके लिए यह लेख एक गाईड के रूप में काम करे मेरी ऐसी मनोकामना है, धन्यवाद।

****

यश खण्डूरी
डिजीटाईजर

राष्ट्रभाषा हिन्दीः समस्यायें और समाधान

महिमा तेश्वर
पुत्री अरूण कुमार तेश्वर

अपने देश में भाषा–समस्या को लेकर विगत कई वर्षो में जितना विवाद और शोरगुल हुआ है, वह न केवल हमारी प्रतिष्ठा के प्रतिकूल है अपितु चिंता का कारण भी है, किंतु इतना स्पष्ट है कि समस्या उलझी ही है, सुलझी नही है।

हिन्दी की प्रमुख समस्या मनोवैज्ञानिक है। अंग्रेजी का पल्ला पकड़े रहने से भारतीय भाषाओं के प्रयोग की आवश्यकता का ही सम्यक् अनुभव नही हो पाता। जिस दिन भारतीय भाषाओं के प्रति ममत्व का भाव आ जायेगा उसी दिन भाषा की समस्या सुलझ जायेगी। दूसरी समस्या पारिभाषिक शब्दावली की है। शिक्षा में, शासन में, विधि में चाहे कहीं भी हिन्दी का प्रयोग करना है तो उपयुक्त शब्दावली होनी चाहिए और उसके अभाव में न तो कार्यालयों में कार्य हो सकता है और न ही न्यायालयों में न्याय की व्यवस्था संभव है।

भारत की अन्य प्रधान भाषाओं में संस्कृत के एक से रूपों का समान व्यवहार होता है। इसलिए यदि हिन्दी के राष्ट्रभाषा के रूप में संस्कृत शब्दावली का प्रयोग किया जाये तो अनुचित नही होगा। परंतु ऐसा करने से हिंदी का जन भाषी रूप दुर्बोध हो जायेगा और वह जन भाषा न रहकर एक कृत्रिम भाषा का रूप धारण कर लेगी। इतिहास साक्षी है कि कृत्रिम भाषा जीवित नहीं रह पाती।

हिन्दी को विश्वस्तरीय भाषा बनाने के लिए उसके प्रसार और प्रचार के लिए नित्य व्यवहारिक कदम उठाने चाहिए। जिससे भारत के प्रत्येक प्रान्त में रहने वाले लोगों के मन से उसके प्रति आर्कषण उत्पन्न हो जाये और वो पूर्वाग्रह से मुक्त होकर मानसिक दासता की बेड़ियों को काट फेंके और हिन्दी के वास्तविक मर्म को समझे।

अब समय आ गया है, जब प्रत्येक भारतीय को मातृभाषा के मर्म को पहचान कर, स्वाभिमान की भावनाओं से भरकर मानसिक दासता के बंधनों से मुक्त होकर, एक जुट होकर हिंदी के प्रचार–प्रसार में सहयोग देना चाहिए। हमे विदेशी भाषा का ज्ञान नहीं, यह हमारे लिए लज्जा की बात नही हो सकती, किंतु किसी भी हिन्दुस्तानी को हिन्दी का ज्ञान नहीं, यह लज्जा और अपमान का विषय है। विदेशी भाषाओं अथवा अंग्रेजी का ज्ञान करना पाप नही हैं, किंतु मातृभाषा के मूल्य पर कुकरमुत्ते की तरह उनका भारत में पनपना जघन्य अपराध है जिसका निस्तारण आने वाली पीढी भी नही कर पायेगी।

भाषा–समस्या के वर्तमान कारणों को देखते हुए हमें निराश नहीं होना चाहिए क्योकि इतिहास गवाह है कि जिस अंग्रेजी राज में सूरज नहीं डूबता था उसमें अब सूरज डूबता है तो अंग्रेजी भाषा के राज में भी सूरज डूबेगा। प्रतीक्षा केवल समय की है।

****

जब तक इस देश का राजकाज अपनी भाषा में नही चलेगा तब तक यह नही कह सकते देश में स्वराज है।

–मोरारजी देसाई

हजार योद्धाओं पर विजय पाना आसान है लेकिन जो अपने ऊपर विजय पाता है वही सच्चा विजयी है।

–गौतम बुद्ध

ऐ जिंदगी

आरती रोहिला
एम•टी•एस•

मैं एक गुस्ताखी करना चाहती हूँ ,
मैं जिंदगी को लिखना चाहती हूँ ,
चंद पंक्तियों में समेटना चाहती हूँ ,

सुना है जिंदगी एक पहेली है,

इसे बूझना चाहती हूँ ,
ऐ जिंदगी तेरे कई रंग है,
कभी दुख में स्याह अंधेरे सी काली,
कभी सुख में गुलाबी,
ऐ जिंदगी मैं तेरे ही रंगों से तेरी एक,
खूबसूरत तस्वीर रंगना चाहती हूँ ,
मैं तुझे तेरे हर रंग में जीना चाहती हूँ ,

सुना है जिंदगी का सफर है सुहाना,
मैं इस सफर में जन्म से मृत्यु तक,
का समय तय करना चाहती हूँ ,
इस सफर में कभी गमों की तपती धूप,
कभी सुख की छाँव है,
ऐ जिंदगी तेरे कई मौसम है,
मैं खुशी की बारिश में बच्चों सा,
नाचना चाहती हूँ ,
संघर्षों का दूजा नाम है जिंदगी,
कभी–कभी जीत है तो कभी हार।
कभी एक गुरू की तरह सिखाती है,
कभी दोस्त बन जाती है,
और अंत में मैं तुझसे कुछ कहना चाहती हूँ ,
ऐ जिंदगी

मैं तुझे गले लगाना चाहती हूँ ,
हाँ मुझे मेरी जिंदगी से प्यार है,
और मैं मेरी जिंदगी को अंतिम क्षण,
तक दिल से जीना चाहती हूँ।

****

शिक्षा सबसे सशक्त हथियार है जिससे दुनिया को बदला जा सकता है।

–नेल्सन मंडेला

मेहनत करने से दरिद्रता नहीं रहती, धर्म करने से पाप नहीं रहता, मौन रहने से कलह नही होता।

–चाणक्य

साईलेज (पशुओं का चारा)

साबर सिंह
वरिष्ठ रिप्रोग्राफर

उत्तराखंड पर ये कहावत प्रचलित है पहाड़ों का पानी और पहाड़ों की जवानी पहाड़ों के काम नही आती।

पलायन का दंश झेल रहा उत्तराखंड का पहाड़ः– यूं तो पूरी दुनिया मे ग्रामीण अँचल से शहरों की ओर पलायन हो रहा है रोजगार की तलाश में नौजवान शहरों की तरफ भाग रहे है।

मेरा मानना है कि उत्तराखंड में पलायन रोकने तथा नौजवानों को पहाड़ों पर ही रोजगार उपलब्ध कराने के लिए पशुपालन (डेयरी उद्योग तथा गोट फारमिंग) एक बहुत ही अच्छा विकल्प है पशुपालन से अन्य राज्यों में युवा किसान उन्नत तकनीक से पशुपालन कर रहे हैं, और अच्छा खासा मुनाफा कमा रहे हैं। पशुपालन में मुख्य रूप से पशुओं के चारे की जरूरत होती है। गर्मियों के मौसम में पहाड़ों पर हरा चारा बहुत ही कम मात्रा में उपलब्ध होता है तथा उत्तराखंड के वनों मे आग लगने से चारा समाप्त हो जाता है उस समय में साइलेज (हरे चारे के गुणों वाला चारा या यूँ कहे पशुओं के लिए अचार) पशुओं के लिए पोषण तत्वों से भरपूर बहुत ही लाभदायक हैं। साइलेज में पशुओं के लिए अनाज (पशुओं का दाना) की मात्र 60 प्रतिशत तक होती है और इसे पशुओं को पचाने में आसानी होती है। पशु इसे बहुत ही चाव से खाते है। हमारे पड़ोसी राज्यों पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश में पशु पालन उद्योग बहुत फलफूल रहा है और किसान साइलेज को अन्य जगहों पर बेच भी रहे हैं। उत्तराखंड में भी सरकार देहरादून के सहसपुर तथा ऊधमसिंह नगर में साइलेज का उत्पादन कर रही है। आपने उत्तराखंड सरकार की **घसियारी योजना** के बारे में अखबार तथा विज्ञापन में पढ़ा होगा। उत्तराखंड सरकार पहाड़ो पर दो रूपये प्रति किलो साइलेज स्वायत्त समूहों के माध्यम से किसानों को वितरित कर रही है। अगर पहाड़ का युवा किसान भी बरसात के समय में जबकि पशुओं का चारा अधिक मात्रा में उपलब्ध होता है उस समय उस चारे को साइलेज के रूप में संरक्षित करे ले तो वर्षभर हरे चारे की किल्लत नहीं होगी। इससे किसानों को गाय, भैंस, बकरी, भेड़ पालन से अच्छी खासी आमदनी होगी।

साइलेज के गुण

साइलेज में हरे चारे के पूर्ण गुण होते हैं। साइलेज खाने से पशुओं में दूध देने की मात्रा बढ़ती है तथा उनका वजन भी बढ़ता है। पशुओं को साइलेज पचाने में आसानी होती है, इससे पशुओं की ऊर्जा बचती है।

साइलेज किस तरह के घास चारे से बनता हैः

साइलेज मुख्यतः अनाजीय चारे (मक्का, जौ, झंगोरा, मंडवा, ज्वार, बाजरा तथा अन्य अनाजीय चारा) से बनाया जाता है, किन्तु जरूरत पड़ने पर किसी भी तरह के हरे चारे (जिसे पशुओं को खिलाया जाता है) से साइलेज बनाया जा सकता है।

साइलेज बनाने में लागत

अगर आप अपने खेतों में चारा उगाते हैं तो मेरा तजुर्बा कहता है कि 50 पैसे प्रति किलो से लेकर 2 रूपये प्रति किलो से ज्यादा लागत नही आयेगी।

व्यवसायिक कारणः

नौजवान किसान ज्यादा मात्रा में साइलेज उपलब्ध होने पर इसका व्यवसाय भी कर सकते हैं। बाजार में साइलेज पाँच रूपये प्रति किलों से छः रूपये पचास पैसे प्रति किलो तक बिकता है।

साइलेज बनाने की विधि

सबसे पहले खेतों में अनाजीय चारा उगाना है। जैसे ही फसल पर अनाज दूधिया अवस्था में होता है तो फसल को जमीन से काट लेते हैं कटी हुई फसल को चॉप कटर से काटा जाता है तथा उसमें शीरा या गुड़ के पानी में नमक मिलाकर स्प्रे किया जाता है। यह ध्यान दिया जाता है कि नमी 70 प्रतिशत के आसपास ही रहे। अब उस चारे को हमे हवा रहित पैक करना होता हैं। इसके लिए किसान अलग–अलग तरीके अपनाने है जैसे कि प्लास्टिक के ड्रम में इसे थोड़ा–थोड़ा डालकर अपने पैरो से दबाते रहते हैं। ड्रम भर जाने पर इसे हवा रहित सील कर देते है।

एक दूसरा तरीका है कि तीन तरफ से कंक्रीट की दीवार बनाकर उसमें दीवारों के ऊपर तक पोलीथीन लगाकर चारा डाला जाता है और अपने पैरों से दबाया जाता है या जिसके पास ट्रैकटर उपलब्ध हो उसके ऊपर बार–बार चलाकर हवा निकाली जाती है। इसी तरह फिर चारा डालकर बार–बार करना होता है। जब दीवारो के बराबर चारा हो जाता है तो उसे पालीथीन से चारों तरफ से हवा रहित ढक दिया जाता है, तथा उसके ऊपर मिट्टी, पत्थर या अन्य भारी सामान रख दिया जाता है।

एक अन्य तरीके से पालीथिन बैगों में मशीनों द्वारा हवा रहित भरा जाता है तथा 45 दिनों के बाद इसे पशुओं को खिलाया जाता है, मेरे संज्ञान में जो मशीन हैं कम से कम एक लाख, तीन लाख उससे ऊपर पच्चीस लाख तक है। मैंने कुछ अपने सामने तथा कुछ वीडियो मे देखे है।
अगर एक बार साइलेज उचित तरीके से बनाया जाता है तो कहा जाता है कि 18 महीने तक संरक्षित रहता है। साइलेज बनाने की तकनीक यू–टयूब तथा भारत के कृषि विभागों की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

साइलेज बनाने की विधि तथा साइलेज के गुणों का प्रचार–प्रसार करके आप नौजवानों को एक अच्छे रोजगार के लिए प्रेरित कर सकते है।

****

बेटी

सतेन्द्र सिंह रावत
मानचित्रकार श्रेणी–1

बेटा वारिस है, बेटी पारस है।
बेटा वंश है, बेटी अंश है।
बेटा आन है, बेटी शान है।
बेटा तन है, बेटी मन है।
बेटा मान है, बेटी गुमान है।
बेटा संस्कार है, बेटी संस्कृति है।
बेटा राग है, बेटी बाग है।

बेटा भाग्य है, बेटी विधाता है।
बेटा शब्द है, बेटी अर्थ है।
बेटा गीत है, बेटी संगीत है।
बेटा प्रेम है, बेटी पूजा है।

सोच

एम0एन0 ढ़ौडियाल
अधिकारी सर्वेक्षक

बुराई करना रोमिंग की तरह है
करो तो भी चार्ज लगता है, और सुनो तो भी चार्ज लगता है,

और

'नेकी' करना जीवन बीमा की तरह है,

जिंदगी के साथ भी
जिंदगी के बाद भी
तो धर्म की प्रीमियम भरते रहिये
और अच्छे कर्म का बोनस पाते रहिये

तुलना

तुलना के खेल में मत उलझो,
क्योंकि इस खेल का कोई अन्त नहीं।
जहां तुलना की शुरूआत होती है,
वही से आनंद और अपनापन खत्म होता है।

क्रोध

मनुष्य सुबह से शाम तक काम करके
उतना नहीं थकता जितना क्रोध और
चिन्ता से एक क्षण में थक जाता है।

समय और समझ

समय और समझ दोनों एक साथ बस किस्मत वालों को
ही मिलती है क्योंकि अक्सर समय पर समझ नहीं आती
और समझ आने पर समय निकल जाता है।

****

स्वास्थ्य सबसे बड़ा उपहार है, संतोष सबसे बड़ा धन और विश्वास सबसे अच्छा सम्बंध।

—गौतम बुद्ध

राष्ट्र देश के अच्छे दिमाग क्लास रूम के आखिरी बैंचो पर मिल सकते है

—डा0 ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम

ईर्ष्या तथा अहंकार को दूर कर संगठित होकर, दूसरों के लिए कार्य करना सीखो

—स्वामी विवेकान्नद

हिमानी थापा
डिजीटाईजर

MOTHERS LOVE...

A mother Teaches her child..... Everything that She Knows Right From talking walking to living a Fullfilling LIFE..♡

एक नई शुरूआत

सीमा सिंह
वरिष्ठ रिप्रोग्राफर

मुग्धा का जन्म एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। नाम के अनुरूप ही थी वो, बचपन से ही जो देखता उसके रूप को देखकर मुग्ध हो जाता था तो माता–पिता ने उसके रूप के स्वरूप ही उसका नाम मुग्धा रखा था। मुग्धा रूप ही नहीं गुणों की भी खान थी। बचपन से ही उसकी विलक्षण प्रतिभा से सभी लोग हतप्रभ रह जाते थे। मुग्धा बड़े होने के साथ–साथ हर चीज में दक्ष हो गई थी। चाहे वह कोई घर का काम हो या उसकी विद्या अर्जन का। पढ़ाई में भी वह विलक्षण प्रतिभा की धनी थी।

बच्चों के पालन–पोषण में समय पंख लगाकर न जाने कहाँ उड़ जाता है, यह बात माता–पिता से अधिक कोई नहीं जानता और यही मुग्धा के माता–पिता के साथ हुआ। बेटी कब बड़ी हुई, कब सयानी हुई और कब प्रतियोगी परीक्षा को उत्तीर्ण कर एक अच्छी नौकरी में लगी उन्हें पता न चला। जिस दिन मुग्धा की नौकरी लगी उन्होनें बेटी को समझाया, आज से तुम्हारे नये जीवन की शुरूआत है बेटी, तुम खूब तरक्की करो हमारा आर्शीवाद तुम्हारे साथ है। मुग्धा ने भी यही माना कि आर्थिक रूप से दृढ़ता पाकर आज उसके जीवन की नयी शुरूआत हुई व उसके जीवन को आयाम मिला है। अब वह इस नयी शुरूआत का आनंद लेगी।

सुंदर रूप व विलक्षण प्रतिभा और साथ ही साथ आर्थिक रूप से सुदृढ़ मुग्धा के जल्द ही रिश्ते आने लगे थे और ऐसा हो भी कैसे न ? हर गुण में इक्कीस जो थी मुग्धा तो इन रिश्तों की बाढ़ तो स्वभाविक ही थी। अभी मुग्धा ने ठीक से उस नयी शुरूआत का आनंद भी न उठाया था कि माता–पिता ने शीघ्र ही उसका रिश्ता अच्छे परिवार में कर दिया। शोभित के साथ उसका रिश्ता तय करने में माता–पिता ने ज्यादा वक्त ना लगाया था क्योंकि वह एक ऊंचे सरकारी ओहदे पर था। मुग्धा अभी विवाह के पक्ष में नहीं थी पर माता–पिता ने सामाजिक परिपाटी पर चलते हुए और उसे उम्र व समाज की दुहाई देते हुए विवाह के लिए राजी कर ही लिया।

जल्दी ही मुग्धा का विवाह शोभित के साथ सम्पन्न हुआ। शोभित भी एक पढ़ा लिखा सुलझा लड़का था व उसके परिवार में मात्र उसके माता–पिता ही थे चूंकि शोभित माता–पिता की एकमात्र संतान था, शायद उसी गणित को देखते मुग्धा के माता–पिता ने रिश्ते को जाने देना उचित न समझा और जल्द ही बेटी की शादी का फैसला किया। विदाई के समय माता–पिता ने ढेरों सामान के साथ मुग्धा को पारिवारिक शिक्षा भी दी थी। बेटी आज से तुम्हारे ''**नये जीवन की शुरूआत है**''। अतः परिवार में सबका आदर करना व उनकी सभी आज्ञाओं का पालन करना। मुग्धा कहना चाहती थी कि अभी तो कुछ समय पहले ही नौकरी लगते ही मेरे नये जीवन की शुरूआत हुयी थी और अभी तो मैने उस नई शुरूआत का आनंद भी नही लिया था, फिर इतनी जल्दी विवाह में बंध के नए जीवन की शुरूआत क्यों? पर वह कुछ प्रतिरोध न कर पाई थी व माता–पिता के कथन को व आदर्शो पर चलने की सीख को अपने मनरूपी सन्दूक में संजो के ससुराल पहुँच गयी। मुग्धा के ससुराल में सबका व्यवहार बहुत अच्छा था। शोभित भी अच्छे व्यवहार के थे परंतु उस नये जीवन की शुरूआत के लिए उसे अपनी इच्छाओं व आकांक्षाओं की तिलांजलि तो देनी ही थी। वह जतनपूर्वक घर बाहर सब जगह की जिम्मेदारी निभाने लगी थी तथा भरसक कोशिश करती थी कि उसके कारण किसी का सम्मान आहत ना हो और जो सब चाहें वो वह बिना किसी नानुकर के कर दे। शादी का एक वर्ष 'इसी नई शुरूआत' में कब व्यतीत हुआ उसे भनक भी ना लगी थी। विवाह के **2** वर्ष उपरांत उसे एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। घर में सब लोग बहुत खुश थे। शोभित ने मुग्धा का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा अब तक जो था सो था आज तुम्हारे **जीवन की नई शुरूआत** है मुग्धा तुम आज माँ बनी हो, और एक स्त्री के लिए जीवन में इससे बड़ा सम्मान व शुरूआत कोई नहीं हो सकती अतएव हमारी संतान को पालने पोसने, गुण संस्कार से सुसज्जित करना एक माँ के रूप में तुम्हारा प्रथम कर्तव्य है अतः मै चाहता हूँ अब तुम बच्चे के लालन पालन में अपना सारा ध्यान केन्द्रित करो और बच्चे के प्रति अपने कर्तव्य में कोई कमी न आने देना।

आज तो मुग्धा को स्वयं लग रहा था कि असहय पीड़ा के बाद पुत्र का जन्म वास्तव में उसके नये "जीवन की शुरूआत" है। बच्चे का मुंह देखकर वह अपनी सारी पीड़ा भूलकर उसके नन्हे–नन्हे हाथों को हाथ में लेकर उसमें खो गई थी। पुत्र का नाम प्यार से उसने कृष्णा रखा था। कृष्णा के जन्म के पश्चात् तो अब उसको न दिन का भान था न रात का। बाहरी कार्य, घर का कार्य, बच्चे का कार्य, उसमें मुग्धा के नये जीवन के दिन रात कहाँ लुप्त होते जा रहे थे उसको स्वंय इसका आभास नहीं था। नित्यप्रति सूर्य कब उदय होता और कब अस्त उसको पता ही नही चलता था। इन्हीं जिम्मेदारियों की चादर ओढे उसका बेटा कब बड़ा हुआ, कब नौकरी करने लगा उसे होश न था वह तो बस उस नये जीवन में सांमजस्य बिठाने में लगी थी। परंतु समय तो अपनी गति से दौड़ ही रहा था। अब उसका बेटा नौकरी पर लग गया था। आज मुग्धा बहुत प्रसन्न थी कि उसकी मेहनत सफल हुई। समय निरन्तर अपनी धुरी पर घूम रहा था तथा इसी प्रकार हथेली से फिसलते समय के साथ ही उसके सास–ससुर भी इस दुनिया को अलविदा कर चुके थे। अब घर में मात्र तीन प्राणी शोभित, कृष्णा और मुग्धा ही थे।

इस 'नये जीवन की शुरूआत' के भ्रम की भागदौड़ में कब विवाह को तीस वर्ष निकले इसका आभास मुग्धा को भी न था। इतने वर्ष के संघर्ष व जिम्मेदारी के थपेड़ों ने मुग्धा की काया को झुलसा जरूर दिया था। आइने में स्वंय को देखकर वह स्वंय को पहचान भी न पाती थी कि वह वही मुग्धा थी जिसका रूप सभी को मंत्र–मुग्ध कर दिया करता था। परंतु उसके मुख पर परम संतोष के भाव की आभा जरूर थी कि उसे जो जिम्मेदारी का निर्वहन करना था वो उसने ठीक प्रकार से निभाई है। वह मन ही मन सोच रही थी कि अब कृष्णा भी अच्छी नौकरी करने लगा है अब मैं शीघ्र ही उसका विवाह करके अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त हो अपने पर भी कुछ ध्यान दूंगी व कुछ समय के लिए आराम करूंगी। कृष्णा के लिए रिश्ते आने लगे थे तथा मुग्धा भी अपने बेटे के लिए सर्वगुण सम्पन्न लड़की की आशा रखते हुए फैसले लेना चाहती थी पंरतु वह हतप्रभ रह गई जब कृष्णा एक दिन शिल्पी को घर लेकर आ कर ऐलान कर दिया कि वह शिल्पी को अपने जीवन साथी के रूप में पसंद कर चुका है। मुग्धा कुछ क्षण तो जड़ हो गई। उसे विश्वास ही नही हो रहा था कि हर हाल में उसकी आज्ञा का पालन करने वाला उसका बेटा कब इतने बड़े निर्णय में स्वंय ही निर्णय ले बैठा था। शोभित भी कृष्णा के इस फैसले से स्तब्ध थे व उसका विरोध करना चाहते थे पंरतु शीघ्र ही मुग्धा ने वास्तु स्थिति को समझते हुए शोभित को समझाया तो क्या हुआ यदि कृष्णा ने स्वंय अपने लिए लड़की पसंद की है। ठीक ही है उन दोनों को साथ जीवन–यापन करना है। यदि लड़का ही लड़की को पसंद नहीं करेगा तो उस विवाह की नींव भी पक्की नहीं रहेगी। दोनों एक ही विभाग में नौकरी करते है व एक दूसरे को पसंद करते है। यही एक अच्छे जीवन की नींव होगी। अंततः शोभित ने बुझे मन से ही सही इस विवाह को करवाने की रजामंदी दे दी थी।

कृष्णा और शिल्पी का विवाह धूमधाम से सम्पन्न हुआ। शोभित व मुग्धा ने इस विवाह को भव्य बनाने में कोई कमी न छोड़ी थी। दोनों खुश थे कि बेटे के जीवन की भी एक नई शुरूआत होने जा रही है। अब मुग्धा भी थोड़ा आराम करना चाहती थी व बेटा बहू के साथ स्नेह के लम्हे गुजारना चाहती थी। शादी को एक महीना भी न गुजरा था कि कृष्णा ने घर आ कर बताया कि उसका व शिल्पी को कार्यालय में प्रमोशन दिया गया है और उनका ट्रांसफर बेंगलूरू कर दिया गया है। ये बेटा बहू की जीवन की बड़ी उपलब्धि थी। शोभित व मुग्धा उससे खुश भी थे पंरतु बच्चों के घर छोड़कर जाने के ख्याल से ही दोनों की आंखे भर आई थी। आखिर जीवन की इस भागदौड़ भरी जिन्दगी के बाद वो ही दोनों तो उनकी छांव थे पंरतु प्रमोशन पर जाना भी जरूरी था। ये उनके उज्जवल भविष्य का सवाल था। अतः भरे मन से दोनों को एयरपोर्ट तक विदा करने दोनों ही गये थे।

घर आकर भी मुग्धा व शोभित बहुत उदास थे। बच्चों से दूरी दोनों को बहुत खल रही थी। मुग्धा के रिटायरमेन्ट में अभी दो साल बाकी थे। शोभित रिटायर हो चुके थे परंतु मुग्धा को ये दो साल तो अकेले काटने ही थे। बेटा बहू तीज त्यौहार में घर आते थे। उसी समय उन्हे जीवन जीवन्त लगता था। दोनो हंस बोल पाते थे परंतु कभी–कभी बेटा बहू घर ना आकर कहीं बाहर भी घूमने चले जाते थे। उन

त्यौहारों में दोनों को घर काटने को दौड़ता था। परंतु उनकी भी अपनी कुछ जिंदगी है सोचकर दोनों समझौता कर लेते थे।

शीघ्र ही मुग्धा के रिटायरमेंट का दिन भी आ गया था। रिटायरमेंट से एक महीने पहले ही शोभित व मुग्धा ने चुपचाप सामान पैक करना शुरू कर दिया था कि अब कहीं जाकर बेटा बहू के साथ रहने का सुख मिलेगा। वो एक **नए जीवन की शुरूआत** बेटे बहू के साथ करेगें ऐसे सपने वे नित्यप्रति सोते जागते संजो रहे थे।

मुग्धा के रिटायरमेंट के उपलक्ष्य में बेटे बहू ने भव्य समारोह का आयोजन किया तथा बहू ने मुग्धा को हीरे का सैट भी दिया। मुग्धा अपने बेटे बहू पर निहाल थी। सब शोभित व मुग्धा की किस्मत को सराह रहे थे। पार्टी बहुत अच्छे से सम्पन्न हुई थी। रिटायरमेंट के तीन दिन बाद बेटा बहू ने अपना सामान पैक करना शुरू कर दिया था। दोनों के टिकट बुक हो चुके थे। मुग्धा ने कहा ऐसी भी क्या जल्दी है बेटा। हम दोनो भी अपना सामान लगभग पैक कर चुके है। मेरे कार्यालय की पेंशन की कुछ औपचारिकताएं निपट जाने दो। एक सप्ताह में इन सब कार्यो से निवृत्त हो कर हम भी तुम्हारे साथ चलते है। पर कृष्णा के जवाब ने उन दोनो को यथार्थ के धरातल पर लाकर पटक दिया वो बोला आप लोग वहाँ चल कर क्या करेंगे। हम दोनों तो घर पर रहते ही नहीं है फिर बहुत जल्दी ही हमारा ट्रांसफर चेन्नई होने वाला है। ऐसे में आप हमारे साथ कहाँ भटकते रहोगे। अतः अच्छा रहेगा आप लोग यही रहें। दूर रहना ही हमारे रिश्तों के लिए ज्यादा अच्छा रहेगा। साथ में रह कर सामंजस्य बिठाना अब हमारे लिए कठिन है क्योकि हमारे जीवन जीने का ढंग आप लोगों से बहुत अलग है। परंतु आप लोग चिंता मत करना हम आपसे मिलने–जुलने आते रहेगें। कृष्णा व शिल्पी वापस जा चुके थे। मुग्धा और शोभित निष्प्राण शरीर के साथ घर में ही रह गये थे। अपनी आती जाती सांस की आवाज भी मुग्धा को श्रव्य थी। आंखे आंसुओं से लबरेज, हृदय में अनगिनत दर्द की टीस परंतु जिहवा संवादविहीन। अब दो ही रास्ते थे उनके पास या तो इस दुख को गले से लगाकर, दिल को दुखी कर अपनी जिंदगी व्यतीत करे या फिर से **'एक नई शुरूआत'** करें जिसमें जीवन की सांझ में ही सही, दोनों एक दूसरे को समझते हुए अपनी जिंदगी के बचे पल खुशहाल गुजारें। मुग्धा निश्चय कर चुकी थी शीघ्र ही वो किसी एन0जी0ओ0 से जुड़कर जरूरतमंद को अपनी सेवाएं देते हुए अपना जीवन व्यतीत करेंगे, आखिर जिंदगी जीने का नाम है हारने का नहीं। कितने ही असंख्य लोग हैं जिन्हें वे सहारा देकर अपनी जिंदगी जीने के मायने को सार्थक सिद्ध कर सकते हैं। सारी जिंदगी की भागदौड़ में जो समय शोभित व मुग्धा एक दूसरे का सान्निधय न पा सके उसकी कमी को पूरा करते हुए एक दूसरे के सुख–दुख, पसंद नापसंद को समझते हुए अपने आगे की जिंदगी व्यतीत करेगें और सही मायने में यही होगी जीवन की सांध्यबेला में उनके जीवन की **'एक नई शुरूआत'**।

****

हरिवंश राय बच्चन

तू न थकेगा कभी, तू न थमेगा कभी, तू न मुड़ेगा कभी, कर शपथ कर शपथ कर शपथ।

हो जाए पथ में रात कहीं मंजिल भी तो है दूर नहीं यह सोच थका दिन का पंथी भी,
जल्दी–जल्दी चलता है दिन जल्दी–जल्दी ढलता है।

आन्या सिंह
पुत्री सीमा सिंह

जिन्दगी

हरी सिंह रावत
मानचित्रकार श्रेणी–1

जिन्दगी में कभी किसी चीज की कमी नहीं,
कभी कुछ पाने की चाह नहीं,
सब तो मिलता है बिना मांगे,
पर फिर भी कुछ अधूरा सा लगता है न जाने।
समझ नहीं आता क्या करूँ,
समझ नहीं आता कहाँ जाऊँ।
सब तो दिया है बिन मांगे,
पर फिर कुछ अधूरा सा लगता है न जाने,

दिल करता है सुबह की किरणों को चुरा लूँ,
रात के अंधेरे को उजाला बना दूं।
सबको रोशनी मैं दिलाऊँ,
हर जगह उस रोशनी की पहुँच मैं बन जाऊँ,
सब करके देख लिया सोच विचार,
पर फिर भी कुछ अधूरा सा लगता है न जाने।
जिन्दगी के उस मोड़ पे आ खड़ा हूं ,
जहाँ रिश्ते तो कई है पर,
अकेलापन सा लगता है न जाने,
सब प्यार करते है बिना मांगे,
पर फिर भी कुछ अधूरा सा लगता है न जाने।
लगे है जिन्दगी की गणित को समझने में,
इसका आरम्भ और अंत ढूंढने में।
हर एक की नजर में खुद को बेहतर बनाने में,
सब कर लिया है समाज के सांचे में ढ़लने को,
पर फिर भी कुछ अधूरा सा लगता है न जाने।

****

मुंशी प्रेमचंद

सौभाग्य उसी को प्राप्त होता है, जो अपने कर्तव्य पथ पर अविचलित रहते हैं।

देश का उद्धार विलासियों द्वारा नहीं हो सकता उसके लिए सच्चा त्यागी होना पड़ेगा।

जीवन का वास्तविक सुख दूसरों को सुख देने में है, उनका सुख लूटने में नहीं

आशा उत्साह की जननी है। आशा में तेज है, बल है, जीवन है। आशा ही संसार की संचालक शक्ति है।

जिसमें दया धर्म नही, निज भाषा से प्रेम नहीं, चरित्र नहीं, आत्मबल नही है, वह भी कोई व्यक्ति नही है।

विचार

भूपेन्द्र सिंह
सर्वेक्षण सहायक

1. किसी को डर है
   कि ईश्वर देख रहा है
   और किसी को भरोसा है
   कि ईश्वर देख रहा है

2. आज से बेहतर कुछ नही
   क्योंकि कल कभी आता नहीं
   और आज कभी जाता नहीं।

3. गलतियां हमेशा दिमाग को, भ्रम में डाल देती हैं
   अगर ट्रेन का टिकिट ना लो तो, समोसे बेचने
   वाला भी टी0 टी0 नजर आता है।

4. पैसे से नहीं मन से अमीर बनें,
   मंदिरो में सोने के कलश,
   भले ही लगे हों,
   लेकिन माथा तो पत्थर की सीढ़ियों पर ही
   झुकाना पड़ता है।

5. समय और शब्द दोनों का उपयोग लापरवाही
   से ना करें, क्योंकि ये दोनों ना दोबारा आते
   हैं ना मौका देते है।

6. भावुक लोग संबंध को संभालते है, प्रैक्टिकल लोग
   संबंध का फायदा उठाते है और प्रोफेशनल लोग फायदा
   देखकर ही संबंध बनाते है।

7. अरमान सिर्फ उतने ही अच्छे हैं जिनमें
   स्वाभिमान गिरवी रखने की जरूरत न पड़े।

8. जीवन में प्रयास सदैव कीजिये ''लक्ष्य'' मिले या
   ''अनुभव'' दोनों ही अमूल्य है।

****

सपना वह नही हैं जो आप नींद में देखे सपना वह है जो आपको नींद ही ना आने दे।

—डा0 ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम

जो जीवन दूसरे के लिए नही जिया जाए वो जीवन नही है।

—मदर टेरेसा

जो व्यक्ति वर्तमान को समझकर परिस्थिति के अनुसार आचरण करता है वही ज्ञानी होता है।

—आचार्य विनोबा भावे

आजादी का अमृत महोत्सव
व
भारतीय सर्वेक्षण विभाग

अजय कुमार,
अधिकारी सर्वेक्षक

भारतीय सर्वेक्षण विभाग भारत का सबसे प्राचीन विभाग है जिसकी स्थापना स्वतन्त्रता प्राप्ति से वर्षों पहले सन् 1767 में हुई थी। अपने विभाग का लगभग 255 वर्षों का गौरवमयी इतिहास है।

इस वर्ष 2022 में सम्पूर्ण भारतवासी स्वतंत्रता प्राप्ति के 75 वर्ष पूर्ण होने पर आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। भारतीय सर्वेक्षण विभाग आधुनिक तकनीक के साथ जहाँ आज है, आइए आप सबको भारतीय सर्वेक्षण विभाग की 15 अगस्त, 1947 से यहाँ तक के सफर की पिछले 75 वर्षों की गौरवमयी गाथा सुनाते हैं।

जब देश आजाद हुआ तो भारतीय सर्वेक्षण विभाग में सम्पूर्ण भारत के लिए 1:50,000 के पैमाने पर सर्वेक्षण एवं मानचित्रण का कार्य जारी था। इसी दौरान 1950 में भारतीय सर्वेक्षण विभाग को भारत सरकार द्वारा अशोक स्तम्भ के साथ प्रतीक चिन्ह से सुशोभित किया गया। 1956 में हमने अपने मानचित्रों की दूरियों को फुट से मीटर में बदलना प्रारम्भ किया। इसी के साथ 1:50,000 के पैमाने पर सर्वेक्षण एंव मानचित्रण का कार्य त्रिकोणमितीय सर्वेक्षण, प्लेन टेबलिंग व फोटोग्रामिट्रिक तकनीक से जारी था।

1964 में भारतीय सर्वेक्षण विभाग ने चुम्बकीय क्षेत्र में काम करते हुए सभावाला देहरादून में चुम्बकीय प्रेक्षणशाला की स्थापना की। सन् 1976 में भारतीय सर्वेक्षण विभाग ने लगभग सम्पूर्ण भारत का 1:50,000 के पैमाने पर सर्वेक्षण एंव मानचित्रण का कार्य पूर्ण कर लिया था। अब तक मानचित्रण का कार्य पारम्परिक तरीकों जैसे फेयर ड्राइंग व स्क्राइबिंग इत्यादि से किया जा रहा था, परन्तु सन् 1981 में अपने विभाग में इसी कार्य को आधुनिक तकनीक के साथ कंप्यूटर से करने का निर्णय लिया तथा कंप्यूटर की मदद से पहली बार मानचित्र तैयार करने प्रारम्भ किए। प्रारम्भ में यह कार्य बहुत धीमी गति से चला परन्तु हम सीख रहे थे और नई तकनीक अपना रहे थे।

वहीं दूसरी ओर सन् 1982 में हमने Space Geodesy का प्रयोग प्रारम्भ कर दिया था। इसी क्रम में मानचित्र अंकीयकरण (Digital Mapping) को बढ़ावा देने के लिए सन् 1986 में 03 मानचित्र अंकीयकरण केंद्र (Digital Mapping Centre) देहरादून व हैदराबाद में प्रारम्भ किए गए। 1990 के दशक में जब दुनिया के अनेक देश अंटार्टिका महाद्वीप में विभिन्न संभावनांए तलाश रहे थे तो इसी दौरान सन् 1990 में पहली बार भारतीय सर्वेक्षण विभाग इस अभियान का हिस्सा बना और महाद्वीप के मानचित्रण का कार्य प्रारम्भ किया।

अब तो तकनीकी के अत्याधुनीकरण के साथ जैसे भारतीय सर्वेक्षण विभाग कदम से कदम मिलाकर चलना चाह रहा था और सन् 1992 में सर्वप्रथम ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (GPS) का प्रयोग करके एक नया कंट्रोल फ्रेम Ground Control Point Library (GCP Library) स्थापित करने का कार्य प्रारम्भ किया।

सन् 2005 में भारत सरकार द्वारा नई राष्ट्रीय मानचित्रण नीति लागू की गई। इसी के साथ भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा मानचित्रों की दो श्रृंखलायें अर्थात् ओपन सीरीज मैप (OSM) व डिफेन्स सीरीज मैप (DSM) तैयार करने प्रारम्भ किए। 2011 तक हमने सम्पूर्ण भारत में GCP स्थापित कर लिए थे, जो कंट्रोल हेतु एक बेहतर फ्रेम था।

सन् 2012 में पहली बार भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली का 3D मानचित्रण किया गया। सन् 2017 के प्रारम्भ तक लगभग सम्पूर्ण देश के OSM व DSM मानचित्र भी तैयार कर लिए गए।

सन् 2017 में भारतीय सर्वेक्षण विभाग ने अपनी स्थापना व भारत के मानचित्रण के क्षेत्र में अपने गौरवशाली इतिहास के 250 वर्ष पूर्ण किए जो कि अपने विभाग के प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक गौरव का क्षण था। प्रत्येक कार्यालय ने इस अवसर को एक उत्सव की तरह मनाया।

इसके पश्चात् विभाग ने सम्पूर्ण अंकीयकरण की ओर कदम बढ़ाते हुए सन् 2017 में e-office व Sparrow आदि कार्य प्रारम्भ किया तथा साथ ही India Maps, G2G Portal, Sahyog App व Manchitra Portal आदि कई Online Portal व App प्रारम्भ किए व साथ ही Indian Vertical Datum- 2019 व ß- Version of Geoid Model आदि का कार्य प्रारम्भ किया गया।

पिछले दो दशकों में भारतीय सर्वेक्षण विभाग ने National Urban Information Scheme (NUIS), Indian Coastal Zone Management (ICZM) व CMPDI परियोजनाओं हेतु अखिल भारतीय स्तर पर मानचित्रण कार्य पूर्ण कर लिया था। 2018–19 में National Hydrology Project (NHP) तथा 2020 में SVAMITVA Project पर कार्य प्रारम्भ हुआ और वर्तमान में युद्धस्तर पर जारी है। वर्तमान में भारतीय सर्वेक्षण विभाग सम्पूर्ण देश में Continuously Operating Reference System (CORS) Network स्थापित करने का अति महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है व अनेक राज्यों में यह कार्य पूर्ण भी किया जा चुका है।

सन् 2021 में हमने नई Geospatial Policy के तहत online map portal जैसी सेवाएं प्रारम्भ की हैं। आज हमारा विभाग GIS व मानचित्रण के क्षेत्र में अपनी अग्रणी भूमिका बनाए हुए है। आज हम Large Scale Mapping हेतु ड्रोन सर्वेक्षण, High Resolution DEM हेतु LiDAR जैसी तकनीकों का बखूबी उपयोग कर रहें है।

इस प्रकार आजादी के इन 75 वर्षों में अपने विभाग ने नित नए कार्य करते हुए सर्वेक्षण एवं मानचित्रण के क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान बनाई है।

****

कल जा चुका है, कल अभी आया नही है, हमारे पास केवल आज है, चलिए शुरूआत करते है।

–मदर टेरेसा

प्रतिभा का अर्थ है कि बुद्धि में नई कोंपले फूटते रहना। नई कल्पना, नया उत्साह, नई खोज और नई स्फूर्ति प्रतिभा के लक्षण है।

–आचार्य विनोबा भावे

हमे कभी हार नही माननी चाहिए और कभी परेशानियों को हमें खुद को हराने नहीं देना चाहिए।

–डा0 ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम

सुदीक्षा
डिजीटाईजर

'प्रेम'

सुमेघा पोखरियाल
डिजीटाईजर

'प्रेम'

प्रेम का केवल एक स्वरूप नहीं–
वह वात्सल्य है, माँ की लोरी में,
वह खुशी है, शिशु की किलकारी में,
वह लगाव है, बहना की राखी में,
लाड़ है, भाई की झिड़की में,
आस्था है, भक्त के भजन में,

चाहत है, प्रेमी–प्रेमिका की बेचैनी में,

'प्रेम'

प्रेम केवल एक विधा नहीं है–
वह गीत की गुनगुनाहट है,
नाटक का संवाद है,
कहानी का कथानक है,
व्यंग का खटराग है,
कला का सृजन है,
नृत्य की झंकार है,

'प्रेम'

प्रेम क्षणिक नहीं है–
वह शाश्वत है,
जीवन की लय है,
भौरों का राग है,
पुष्प की मुस्कराहट है,
प्रकृति का संदेश है,
संबधों का आभास है।

****

बाँध लेगे क्या तुझे यह,
मोम के बंधन सजीले,
पंथ की बाधा बनेंगे,
तितलियों के पर रंगीले,
विश्व का क्रंदन भुला देगी
मधुप की मधुर गुनगुन,
क्या डुबो देंगे तुझे,
यह फूल दे दल ओस गीले
तू न अपनी छाँह को अपने लिए कांटा बनाना
जाग तुझको दूर जाना

–महादेवी वर्मा

यज्ञ से विविध रोगों की चिकित्सा

यज्ञ ही जीवन का केन्द्र है। महर्षियों ने मनुष्यों को आरोग्यता प्राप्त करने के लिए प्राणायाम की विधि बतलाई तथा यज्ञ की विधि सिखलायी। उन्होने कहा कि जो मनुष्य यज्ञ नही करते वे पाप के भागी होते है क्योकि मनुष्य के शरीर से जितनी, दुर्गन्ध उत्पन्न होती है उससे ज्यादा सुगन्ध फैलनी चाहिए। मनुष्य का सुखी रहने का यही वैज्ञानिक आधार है।

अरूण कुमार तेश्वर
वरिष्ठ रिप्रोग्राफर

वैदिक युग में हवन का विधि–विधान बहुत ही वैज्ञानिक था। आयुर्वेद में धूम्र चिकित्सा का वर्णन मिलता है हवन से वायु मण्डल शुद्ध होता है क्योकि वायुमण्डल में ही जीवणु, विषाणु और कीटाणु मिलते है वे सांस द्वारा मानव के शरीर में प्रवेश कर रोगनिवारण का कार्य करता है। हवनोत्पन्न धूम्र, का सीधा संबंध मस्तिष्क एवं रक्तदाब आदि रोगों का शमन करता है। जन्म से लेकर इहलोकलीला समाप्त होने तक समग्र जीवन यज्ञमय ही रहता है। ऋषियों ने यज्ञ का ऐसा वैज्ञानिक सूक्ष्म–अध्ययन किया था कि अतिवृष्टि, अनावृष्टि, पुत्रेष्टि सभी यज्ञ द्वारा संभव है। आज मनुष्य अत्यधिक तनावग्रस्त है एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ सी लगी है। तेज गति से असाध्य बीमारियां बढ़ रही हैं जैसे कैंसर, हृदय रोग, उन्माद, क्षयरोग, अर्श, मधुमेह आदि बीमारियां है, जिनका कोई समाधान नजर नही आता है। आयुर्वेद में वर्णित कुछ औषधियां है जिन्हे सामग्री में मिश्रित कर हवन में डाली जाये तो मानव का कल्याण संभव है। अग्नि में डाला हुआ पदार्थ सूक्ष्म होकर वायु में फैलता है, क्योकि वायु में भेदक शक्ति होती है। वेदों में अनेक स्थानों पर लिखा है कि ऋतुओं के अनुसार देव यज्ञ में औषधि युक्त सामग्री की आहुति दी जायें। यह एक वैज्ञानिक रहस्य है क्योकि ऋतुसंधियों में प्रायः व्याधियां पैदा हुआ करती है। एक ऋतु की समाप्ति तथा दूसरे ऋतु आगमन पर वायु मंडल प्रदूषित हो जाता है जिससे अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं। विविध प्रकार की औषधियों से हवन करने का निर्देश हमारे वेद पुराणों में मिलता है।

यज्ञों में अदृश्य शक्तियां होती है। फ्रांस के वैज्ञानिक प्रो० टिलबर्ट ने कई परीक्षण किये। उन्होने आग में चीनी डाली और देखा संक्रमण रोगों के जीवाणुओं, विषाणुओं का शीघ्रातिशीघ्र विनाश हो गया। विदेशी विज्ञावेत्ता विभिन्न प्रकार के प्रयोग करके इस निष्कर्ष पर पहुंच चुके हैं कि भारतीय ऋषि युक्तिसंगत एवं वैज्ञानिक होते थे। मंत्रों द्वारा जब यज्ञ किया जाता है तो औषधियुक्त सामग्री के साथ उसका प्रभाव दो गुना हो जाता है।

****

यादों की रसधार

आकांक्षा चौहान
डिजीटाईजर

"यादों की रसधार मेरे हृदय में आती है,
छूकर मेरे अंतर्मन को फिर से बहलाती है,

याद उस मनोरम बचपन की,
याद उस घरौंदे के आंगन की

जिम्मेदारियों के बोझ तले
वो वक्त ना जाने कहाँ खो गया,

मैं समझाती बहुत हूँ लेकिन
यादों की रसधार मेरे हृदय में आती है,
यादों की रसधार मेरे हृदय में आती है"।

मूर्खों का डिज्नीलैंड

आलोक मिश्रा
सर्वेक्षक

मेरा मित्र आजकल बड़े सुकून के साथ सो रहा है। सरकारी दफ्तर में काम करते–करते जीवन और उसकी व्याख्याओं का चिंतन करना बड़ा आसान काम हो जाता है। अपने मातहतों पर रौब झाड़ना और दिन गुजरते ही अपने मित्रों के समक्ष उस दिन का आख्यान करना! बहुत सुकून का काम है। आजकल प्रकृति भी उसका बहुत साथ दे रही है। मौसम बेहद हसीन हो रखा है। सूर्यदेव कोहरे रूपी कम्बल के नीचे दुबककर संसार को आलोकित कर रहे है। महत्वपूर्ण यह है कि मौसम का सहयोग अत्यंत आवश्यक है अन्यथा काम की गति और भी बढ़ जाती है। रिपोर्ट्स सुबह शाम दी जाती हैं। जिनसे अनुमान लगाना बेहद आसान है कि काम की गति अत्यंत तीव्र है। उसके मातहत काम करते करते थक जा रहे है! सभी स्वस्थ हैं। किसी को किसी प्रकार की मानसिक या शारीरिक कठिनाइयों का सामना नही करना पड़ रहा है। आजकल सर्दी–खाँसी, बुखार, सिरदर्द, मानसिक अवसाद जैसे लक्षण आम बात है क्योंकि कोरोना चल रहा है। पर यह केवल निम्न वर्गीय कर्मियों के लिए गीता में उल्लेखित मंत्र है। दूसरा वर्ग अर्थात् जिस वर्ग में हमारा मित्र है थोड़ी सी बात पे अपने आपको कुछ दिनों के लिए दिनचर्या से मुक्त कर लेता है। उसको निम्नवर्गीय चापलूस कर्मियों, जिसमें यूनियन के नेता तथा अन्य होते है, से सहानुभूति भी प्राप्त होती है। सरकारी तंत्र जो आम नागरिकों के लिए पथ प्रदर्शक होता है वहाँ ऐसी सकारात्मक ऊर्जा का होना विशिष्ट है। हालांकि हमारा मित्र बेहद होनहार है पर अत्यंत अनुपयोगी योजना और उसका कार्यान्वयन उसको दूरदर्शी, मितव्ययी और उद्धारक साबित करती है। मेरी शुभकामनाएं सदा उसके साथ है।

****

'भिखारन'

सुमेघा पोखरियाल
डिजीटाईजर

बहुत दिन बाद दरवाजे पर मेरे आज
खड़ी थी वो भिखारन।
गोद में नवजात शिशु को लिये,
खड़ी थी वो भिखारन।
किसी की व्याभिचार की कहानी,
कह रही थी वो भिखारन।

न जाने इस संसार में कहाँ–कहाँ,
भटकेगी वो भिखारन।
बार–बार किसी शैतान की वहस का,
शिकार बनेगी वो भिखारन।
मेरे दर पर एक बार फिर फूला पेट लिए,
खड़ी हो जाएगी वो भिखारन।

सोने की चिड़िया को सोना तोहफा

उपदेश कुमारी
सर्वेक्षक

अभी हाल ही में हुए कॉमनवेल्थ गेम्स काफी चर्चा में रहे। भारत ने 61 पदकों के साथ चौथा स्थान हासिल किया। बर्मिंघम में राष्ट्रमण्डल खेलों में भारत का प्रदर्शन काफी संतोषजनक रहा। भारत ने 22 स्वर्ण, 16 रजत एवं 23 कांस्य पदक प्राप्त किए। यूं तो पदक प्राप्त करना ही अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है किन्तु सोने की चमक अलग ही होती है। भारत को स्वर्ण की इस चमक से सुसज्जित करने वाले इन महान खिलाड़ियों का संक्षिप्त विवरण आपके समक्ष प्रस्तुत हैः–

1. **मीराबाई चानूः–** 8 अगस्त 1994 को इंफाल से 20 Km दूर नोंगपोक काकचिंग गांव में जन्मी मीराबाई के पिता PWD में काम करते है एवं माता गृहणी हैं। मीराबाई बचपन में अपने भाई से ज्यादा वजन उठा लिया करती थी। वह ट्रेनिंग के लिए रोज 22 km दूर जाया करती थी।

   चानू ने कॉमनवेल्थ–2022 में अपने रिकार्ड के साथ–साथ अन्य 6 रिकार्ड तोड़कर स्वर्ण पदक पर अपना कब्जा किया।

   मीराबाई ने 2016 कॉमनवेल्थ में रजत 2018 कॉमनवेल्थ में स्वर्ण और टोक्यो ओलम्पिक 2021 में रजत पदक हासिल किया। वहीं इस बार उन्होनें कॉमनवेल्थ–2022 में 48 कि0ग्रा0 भारोत्तोलन में भारत स्वर्ण पदक दिलवाया।
2. **विनेश फोगाटः–** 28 वर्षीय विनेश का जन्म हरियाणा के बलाली गांव में हुआ था। वे प्रसिद्ध रेसलर गीता एंव बबीता फोगाट की चचेरी बहन है। इनके ताऊ महावीर फोगाट इनके कोच भी है। इनके पिता की मृत्यु बचपन में ही हो गई थी। 2014, 2018 के कॉमनवेल्थ खेलों में भी इन्हें स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ था। किन्तु 2021 ओलम्पिक में खराब प्रदर्शन के बाद करियर के खराब दौर से गुजरने के बाद विनेश ने 2022–कॉमनवेल्थ गेम्स में शानदार वापसी करते हुए स्वर्ण पदक हासिल किया।
3. **साक्षी मलिकः–** रोहतक के पास मोखरा गांव में जन्मी साक्षी को बचपन में यह भी नहीं पता था कि ओलम्पिक क्या होता है। वह खिलाड़ी इसलिए बनना चाहती थी ताकि हवाई जहाज में बैठ सके। अपने दादा बदलूराम जो कि एक पहलवान थे, से प्रेरणा लेते हुए साक्षी ने तय किया कि वे कुश्ती लड़ेगी। साक्षी के पिता एक बस कंडक्टर व माता आंगनबाड़ी कार्यकर्ता हैं। साक्षी ने ओलम्पिक 2016 में कांस्य पदक प्राप्त कर ओलम्पिक पदक जीतने वाली पहली महिला पहलवान बनी। कॉमनवेल्थ–2022 में यह स्वर्ण उनका तीसरा पदक है। इससे पहले वे 2014 में रजत व 2018 में कांस्य पदक जीत चुकी है।
4. **नीतू घणघसः–** अक्सर सुनते है कि बेटियां पापा की परियां होती है इस बात को हरियाणा के भिवानी गांव की बेटी एंव स्वर्ण पदक विजेता नीतू के पिता जय भगवान ने साबित किया। शुरूआत में पदक प्राप्त न होने पर नीतू ने मुक्केबाजी छोड़ने का फैसला किया था। तब पिता ने

उन्हें समझाया तथा नौकरी से लीव विदाउट पे होकर अपनी बेटी को मुक्केबाजी का प्रशिक्षण दिलवाया। पिता एंव बेटी के इसी परिश्रम की बदौलत भारत ने मुक्केबाजी में स्वर्ण पदक जीता।

5. **पी0 वी0 सिंधूः–** 1995 में हैदराबाद में जन्मी सिंधू को खेल में रूचि विरासत में मिली। उनके माता–पिता दोनों ही बालीवाल के खिलाड़ी रह चुके है। किंतु सिंधू ने अपना खेल बैडमिंटन को चुना। 8 साल की उम्र से ही उन्होनें बैडमिंटन खेलना शुरू कर दिया। वह अपने नाम 5 विश्व चैंपियनशिप पदक और दो बार ओलम्पिक पदक (2016 रजत व 2021 में कांस्य) कर चुकी है। लगातार दो ओलम्पिक मेडल जीतने वाली वह पहली महिला है।
6. **भवीना पटेलः–** गुजरात के मेहसाणा जिले के एक छोटे से गांव में जन्मी भवीना को एक साल की उम्र में पोलियो का शिकार होना पड़ा। परिवार की आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं थी कि उनका इलाज कराया जा सकता नतीजन उनको व्हीलचेयर को ताउम्र के लिए अपनाना पड़ा। पैशन के तौर पर शुरू किए टेबिल टेनिस में भाविना ने कॉमनवेल्थ–2022 में पैरा टेबिल टेनिस में गोल्ड हासिल किया। यह कॉमनवेल्थ में उनका पहला मेडल है। इससे पहले टोक्यो पैरालम्पिक–2021 में रजत जीता था। कॉमनवेल्थ–2022 में स्वर्ण जीतने के बाद उन्हें पी0एम0 मोदी के शुभकामना संदेश पर कहा कि स्वतंत्रता दिवस के अमृत महोत्सव पर इससे बड़ा उपहार नहीं हो सकता।
7. **निखत जरीनः–** 14 जून 1996 को निखत का जन्म तेलंगाना के निजामाबाद में हुआ। उनकी तीन बहनें और हैं। निखत ने अपने चाचा जो कि एक बाक्सिंग कोच है को देख कर मुक्केबाजी को सीखने की इच्छा जाहिर की। तब वह तेरह वर्ष की थी। वे बताती है कि केवल पिता ने ही उनका समर्थन किया। माता को डर था कि मुक्केबाजी से उनका चेहरा खराब हो गया तो शादी कैसे होगी। वर्ष 2020 में उन्हें इरोड नेशनल्स द्वारा, ''गोल्डन बेस्ट बॉक्सर'' से सम्मानित किया गया। 2022 कॉमनवेल्थ में उन्होनें अपना पहला पदक स्वर्ण के रूप में प्राप्त किया।
8. **जेरेमी लालरिनुंगाः–** 19 वर्षीय जेरेमी 10 वर्ष की उम्र से ही भार उठाने का अभ्यास करने लगे थे। और 12 वर्ष की उम्र मे वे नेशनल व इंटरनेशनल टूर्नामेंट में भाग लेने लगे। जेरेमी के पिता नेशनल लेवल के मुक्केबाज रहे हैं। जेरेमी के नाम कई रिकॉर्डस दर्ज है जैसे युवा ओलम्पिक में 67 कि0ग्रा0 वर्ग में स्वर्ण जीतने वाले पहले भारतीय सबसे कम उम्र में कॉमनवेल्थ में स्वर्ण लेने वाले पहले भारतीय, 305 कि0ग्रा0 रिकार्ड वेटलिफ्टर भी वही है।
9. **अंचिता शेउलीः–** पश्चिम बंगाल में जन्मे अंचित एक बार 10 वर्ष की उम्र में जिम जा पहुंचे तो वहां बड़े भाई आलोक को वेट लिफ्टिंग करता देख प्रेरित हुए। पिता रिक्शा चालक थे तो गुजारा बड़ी मुश्किल से होता था। 2013 में पिता की अचानक मृत्यु से भाई आलोक का भारोत्तलन का सपना तो टूट गया किन्तु उन्होनें भाई अंचित का सपना पूरा करने की जिद की। अंचित के बेहतर प्रदर्शन को देखते हुए एक फांउडेशन ने उनकी मदद की। अपने प्रतिद्वंदी से रिकार्ड 10 किलो ज्यादा वजन उठा के उन्होनें स्वर्ण पदक अपने नाम किया।
10. **सुधीरः–**28 वर्षीय हरियाणा के सोनीपत में रहने वाले सुधीर को तेज बुखार के कारण चार वर्ष की आयु में पोलियो हो गया। परन्तु उन्होनें इसे अपने खेलों की रूचि के आड़े नही आने दिया। 2016 में नेशनल में पहला स्वर्ण तथा 2018 में इंटरनेशनल में मेडल प्राप्त किया। उन्होनें पहली बार पैरा

पॉवर लिफ्टिंग में भारत को स्वर्ण दिलाकर इतिहास रच दिया। 2018 में 17 वीं सीनियर और 12 वीं जूनियर नेशनल पैरा पॉवर लिफ्टिंग चैपियनशिप में ''स्ट्रान्ग मैन ऑफ इण्डिया'' भी नामित किया गया।

11. **दीपक पुनियाः—** 1999 में हरियाणा के झज्जर गांव में जन्में दीपक का बचपन से झुकाव कुश्ती की तरफ रहा। 5 वर्ष की आयु से ही उन्होनें कुश्ती में भविष्य की तैयारी शुरू कर दी। टोक्यो ओलम्पिक 2021 में यह ब्रान्ज मेडल जीतने से रह गये थे। कॉमनवेल्थ 2022 में स्वर्ण पदक अपने नाम करने के बाद इन्होनें बयान में कहा कि वह काफी डरे हुए थे क्योंकि 5 अगस्त ही वह दिन था जब ये ओलम्पिक में पदक से चूक गए थे।
12. **नवीन मलिकः—** राष्ट्रमंडल खेलों में हरियाणा के पहलवानों का काफी दबदबा रहा। 2002 में सोनीपत में जन्में नवीन इंडियन एयरफोर्स में कार्यरत है। 3 वर्ष की उम्र से पिता पहलवानी सिखाते थे। 60 कि0मी0 सफर तय करके पिता रोज उन्हें दूध पहुंचाने जाते थे जिससे उनका संतुलित भोजन बना रहे। और स्वर्ण जीत कर उन्होनें मेहनत को सफल कर दिखाया। पहले ही प्रयास में उन्होनें गोल्ड मेडल जीता है।
13. **रवि दहियाः—** 1998 में सोनीपत के नाहरी गांव में रवि की आर्थिक स्थिति अच्छी नही थी पिता दूसरे के खेतों में काम किया करते थे। माता—पिता ने बचपन में काबिलियत देखते हुए इन्हें ट्रेनिंग स्कूल में दाखिला दिलवाया। उन्होनें अपना पहला मैच ही अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खेला और कांस्य पदक जीता। टोक्यो ओलम्पिक 2021 में उन्होनें रजत पदक जीता। उन्होनें कॉमनवेल्थ 2022 में फाइनल्स में सवा मिनट में प्रतिद्वंदी को हरा कर स्वर्ण अपने नाम किया।
14. **अमित पंघलः—** रोहतक के मयाना गांव में 1995 में जन्में अमित के घर में बाक्सिंग का माहौल था। अमित के भाई अजय भी बॉक्सर रहे जो कि अब भारतीय सेना में है। गरीब होने के कारण परिवार केवल एक बॉक्सर का खर्चा वहन कर सकता था तो बड़े भाई ने अमित को प्रशिक्षण दिलाने पर जोर दिया। बड़ा भाई अजय 10 दिन की छुट्टी लेके भाई का मैच देखने घर आया। 2017 में नेशनल में स्वर्ण अपने नाम किया एंव 2018 कॉमनवेल्थ में रजत जीता और 2022 राष्ट्रमण्डल खेलों में ओलम्पिक गोल्ड मेडलिस्ट को पराजित कर गोल्ड जीता।
15. **एल्डॉस पॉलः—** 1996 में केरल में जन्में एल्डॉस ट्रिपल जंप में भारत को सोना दिलाया। 2022 में नेशनल फेडरेशन कप में भी स्वर्ण पदक जीते। भारत को ट्रिपल जंप में स्वर्ण दिलाने वाले पहले एथलीट बने।
16. **बजरंग पुनियाः—** 1994 को झाझर में पैदा हुए बजरंग पुनिया के पिता व भाई भी पेशे से पहलवान रह चुके है। सात वर्ष की उम्र से ही वह पहलवानी कर रहे है। जब भी किसी प्रतिस्पर्धा में उतरते है देश को उनसे स्वर्ण की ही उम्मीद रहती है। उन्होनें राष्ट्रमंडल खेलों में 2014 में सिल्वर 2018 में गोल्ड व टोक्यो ओलम्पिक में कांस्य जीता है। वे विश्व कुश्ती में 3 पदक जीतने वाले भारतीय पहलवान रहे है।
17. **लक्ष्य सेनः—** अगस्त 2001 में उत्तराखण्ड में जन्में लक्ष्य के पिता जाने माने बैडमिंटन कोच है। 4 साल की उम्र से ही लक्ष्य बैडमिंटन खेलने लगे थे। इससे पहले वह मिक्स टीम में सिल्वर जीत चुके है।

18. **शरत कमल अंचलः–** 40 वर्षीय इस खिलाड़ी का जन्म तमिलनाडु में हुआ। वह इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन में कार्यरत है। 2004 में अर्जुन पुरस्कार इन्हें प्राप्त हुआ। शरत ने 9 बार राष्ट्रीय खिताब जीते हैं। उन्होनें साबित कर दिया है "Age is just a number" 40 वर्षीय एथलीट ने एक स्वर्ण (सिंगल्स), 2 स्वर्ण (मिक्सड), एक रजत मैनस डबल्स में हासिल कर बेस्ट एथलीट बनें।

****

पद–स्थ

आलोक मिश्रा
सर्वेक्षक

कैसे हो तुम
मदमस्त हाथी जैसे
कि पैरों के नीचे
दिखता ही नहीं।
तुम्हें बड़ी इच्छा है
दूसरों का सत्य जानने की
जैसे तुम्हें आनंद आता है
झाँकने मे!

बड़े हो!
लोग आते हैं प्रार्थनाएं लेकर।
कई ऐसे भी
जो जख्मो को छुपाते है।
पर तुम्हें आनंद आता है
उन्हे कुरेदने मे
जैसे दर्द और परेशानियाँ
तुम्हें सुकून देती हो!
पर बात इतनी सी है
कितने ही बड़े
धूल–धूसरित हो गये
किसी का नामोनिशान न रहा
सभी पिस गये
इस कालचक्र मे।
कभी किसी मोड पर
जब तुम अपना आवरण हटाकर
खुद का साक्षात्कार करोगे
शायद डर लगे तुमको
पर तुम झुक न सकोगे
उस जीर्ण हालत मे भी
तुम अपने दर्प और पाखंड
के बोझ से दबे रहोगे।
हे मित्र
संभालो खुद को
क्योकि यह केवल तुम हो
जो खुद को डूबने से बचा सकते हो।

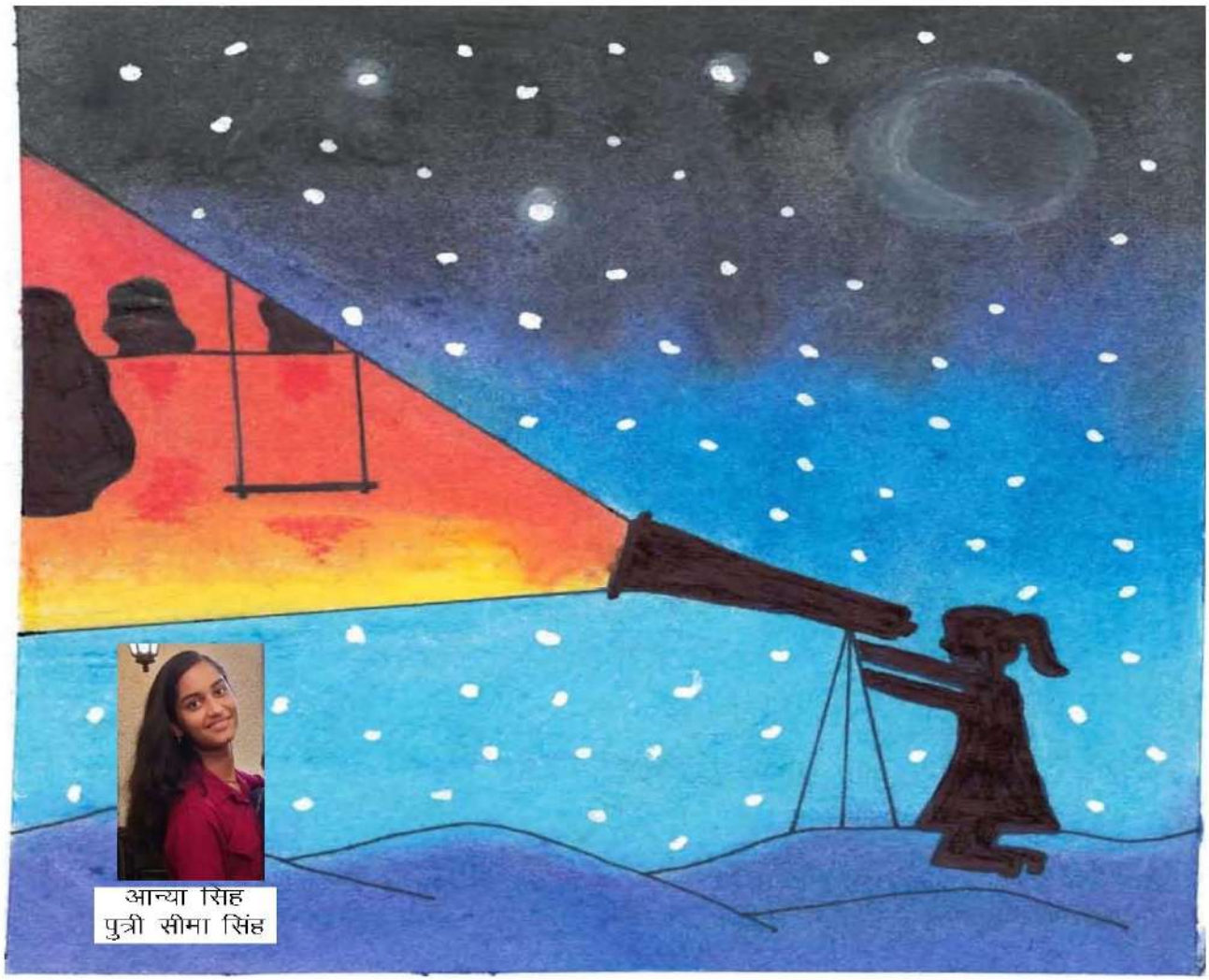

आन्या सिंह
पुत्री सीमा सिंह

आकांक्षा चौहान
डिजीटाईजर

विविधता में एकता

रोनिका फोगाट
एम0 टी0 एस0

असमानता में अखंडता है ''विविधता में एकता,'' भारत एक ऐसा देश है जो ''विविधता में एकता'' की अवधारणा को अच्छे तरीके से साबित करता है, भारत एक अधिक जनसंख्या वाला देश है तथा पूरे विश्व में प्रसिद्ध है क्योंकि यहाँ ''विविधता में एकता'' का चरित्र देखा जाता है, ''विविधता में एकता'' भारत की शक्ति और मजबूती है जो आज एक महत्वपूर्ण गुण के रूप में भारत की पहचान करता है।

विश्व में भारत सबसे पुरानी सभ्यता का एक जाना–माना देश है जहाँ वर्षों से कई प्रजातीय समूह एक साथ रहते है। भारत विविध सभ्यताओं का देश है जहाँ लोग अपने धर्म और इच्छा के अनुसार लगभग 1650 भाषाएँ ओर बोलियों का इस्तेमाल करते है। संस्कृति, परंपरा, धर्म और भाषा से अलग होने के बावजूद भी लोग यहाँ पर एक–दूसरे का सम्मान करते है साथ ही भाईचारे की ढेर सारी भावनाओं के साथ एक साथ रहते हैं। लोग पूरे भारत की धरती पर यहाँ–वहाँ रहते तथा भाइचारें की एक भावना के द्वारा जुड़े होते है। अपने राष्ट्र का एक महान चरित्र है ''विविधता में एकता'' जो इंसानियत के एक सम्बन्ध में सभी धर्मों के लोगों को बांध के रखता है।

देश के महान राष्ट्रीय एकीकरण अभिलक्षण के लिये ''विविधता में एकता'' को बढ़ावा दिया गया है जो ढ़ेर सारे भ्रष्टाचार, अतिवादी और आंतकवाद के बावजूद भी भारत की मजबूती और समृद्धि का आधार बनेगा। आमतौर पर विभिन्न राज्यों में रहने वाले लोग अपनी भाषा, संस्कृति, परंपरा, परिधान, उत्सव, रूप आदि में अलग होते है, फिर भी वो अपने आपको भारतीय कहते है जो ''विविधता में एकता'' को प्रदर्शित करता है।

यहाँ ''विविधता में एकता'' को बनाए रखने के लिए लोगों की मानवता और संभाव्यता मदद करती है। भारत में लोग अपनी संपत्ति के बजाए आध्यात्मिकता, कर्म और संस्कार को अत्याधिक महत्व देते है जो उन्हें और पास लाता है। अपने अनोखे गुण के रूप में यहाँ के लोगों में धार्मिक सहिष्णुता है, जो उन्हें अलग धर्म की उपस्थिति में कठिनाई महसूस नहीं करने देती। भारत में अधिकतर लोग हिन्दू धर्म के है जो अपनी धरती पर सभी दूसरी अच्छी संस्कृतियों को अपनाने और स्वागत करने की क्षमता रखता है। भारतीय लोगों की इस तरह भी विशेषताएं यहाँ पर ''विविधता में एकता'' को प्रसिद्ध करती है।

****

यदि मुझ पर कुछ लिखना ही है तो सिर्फ मेरे कार्यो पर लिखो ताकि लोगों को प्रेरणा मिल सके।

–मदर टेरेसा

महान विचार ही कार्यरूप में परिणित होकर महान कार्य बनते है।

–आचार्य विनोबा भावे

1857 की आजादी

विजय कुमार
लोकल लेबर

कस ली है, कमर अब तो, कुछ करके दिखाएंगे।
आजाद ही हो लेंगे,
या सर ही कटा देंगे।
हटने के नही पीछे,
डरकर कभी जुल्मो से।
तुम हाथ उठाओगे,
हम पैर बढ़ा देंगे।
बेशस्त्र नही है हम,
बल है हमे चरखे का।
चरखे से जमीं को हम,
ता चर्ख गुंजा देंगे।
परवाह नही कुछ दम की,
गम की नही, मातम की।
है जान हथेली पर,
एक दम में गवां देंगे।
उफ तक भी जुबां से,
हम हरगिज़ न निकालेंगे।
तलवार उठाओ तुम,
हम सर को झुका देंगे।
चलवाओ गन मशीनें,
हम सीना अड़ा देंगे।
दिलाओ हमें फांसी,
ऐलान से कहते है।
खून से ही हम शहीदो के,
फौज बना देंगे।
मुसाफिर जो अंडमान के,
तूने बनाए जालिम।
आजाद ही होने पर,
हम उनको बुला लेंगे।
कस ली है कमर अब तो,
कुछ करके दिखांएगे।
जय हिंद।

****

यदि आप सौ लोगो को भोजन नही करवा सकते तो कम से कम एक को ही करवाएं

—मदर टेरेसा

जब तक कष्ट सहने की तैयारी नहीं होती तब तक लाभ दिखाई नहीं देता। लाभ की इमारत कष्ट की धूप में ही बनती है।

—आचार्य विनोबा भावे

सन्नाटा

अशोक सिंह
H/O सीमा सिंह

उस रात मसूरी की लाइटें ज्यादा चमक रही थी। पिछले दो दिन से हो रही लगातार वर्षा आज शाम ही थमी थी। मौसम बड़ा खुश मिजाजी हो जन मन को आमन्त्रित कर रहा था कि आओ और डूब जाओ सब मस्त होकर। मैं अपने पूरे यौवन में कभी–कभी आता हूं। मौसम के इसी आमन्त्रण को स्वीकार कर मैनें भी अपनी पत्नी से निवेदन किया और हम बरामदे में बैठ कर कॉफी का आनन्द ले रहे थे या यूं कहो कॉफी तो एक बहाना था मौसम का ही आनन्द ले रहे थे। मेरा घर देहरादून के एक छोटे से गांव के बाहर खुले में है। घर के सामने से मसूरी की छटा सदा शोभायमान रहती है। वैसे मेरे घर के तो चारों ओर ही पर्वत श्रृंखलाओं का एक गोला नजर आता है। जो ऐसा प्रतीत होता है कि अपनी दोनों बाहें फैलाये अपनी ओर बुला रहा है कि आओ मुझसे दोस्ती कर लो, मेरे साथ इतराओ, इठलाओ। एक सन्देश भी देता है कि मेरी तरह अटल रहो।

हम अपनी कॉफी का आनन्द लेते हुये मौसम की तारीफ किये जा रहे थे। रात के करीब दस बज रहे थे बहुत हल्की फुहारें पड़ने लगी थी। मेरी पत्नी बाहर निकल कर अठखेलियां कर रही थी। अपने दोनों हाथ फैलाकर आसमान की तरफ मुंह करके गोल–गोल घूम रही थी और अपने बचपन को याद कर रही थी। मैं उनको वापस बुला रहा था। जिम्मेदारी भी कोई चीज होती है साहब। एक जिम्मेदार पति, एक जिम्मेदार दो बच्चों का पिता हूं। अतः मैं उन्हें अन्दर बुला रहा था कि आ जाओ नही तो तबीयत खराब हो जायेगी। वो भी अधिकांश पत्नियों की तरह ही मेरा कहना टाल रही थी। बस एक जिम्मेदार पति बस इतना ही आनन्द ले पाते है जीवन का। मेरे दोनों बच्चे भी हमारे पास आ गये तो वे घर के सामने की सड़क पर टहलने लगे। यद्यपि मैं अभी इतना बुजुर्ग भी नहीं हूं तब भी मैं उन्हें तबीयत खराब होने की बात कह बार–बार अन्दर बुलाने हेतु एक बुजुर्ग की जिम्मेदारी का निर्वहन कर रहा था। कुछ देर मना करने पर जब सब नहीं माने तो मैं भी उनके साथ हो लिया। अब बूंदे भी बन्द हो चुकी थी। बच्चे हसीं कर रहे थे। मेरा बेटा थोड़ा गम्भीर है परन्तु मेरी बिटिया हाजिर जबाव है परन्तु उसकी बातों से हंसी आती है। बस इन्हीं पलों का आनन्द लेते हुये मसूरी की छटा की बार–बार तारीफ भी कर रहे थे। चारों ओर सन्नाटा था, सड़क सुनसान थी हम चारों के अलावा गुप्ता जी अपने कुत्ते को घुमा रहे थे। गुप्ता जी हमारी कॉलोनी में ही रहते है और इनकम टैक्स विभाग में बड़े अफसर हैं। उनका कुत्ता भी मंहगा है। गुप्ता जी का घर बड़ा और शानदार है। उनके बैठक की सजावट देखकर तो मेरे जैसा इन्सान अन्दर जाने में भी डरता है। मैं कभी उनके घर जाता हूं तो अक्सर बाहर ही बैठकर वापस आ जाता था। गुप्ता जी अपने घर और अपने बाहर की सफाई का विशेष ध्यान रखते है परन्तु वे कालोनी में अन्य किसी के घर के बाहर या कहीं भी जहां उनके मंहगे कुत्ते की इच्छा होती है सड़क पर डिजाइन बनवा देते है। उनकी इस आदत से कालोनी के कई लोग विरोध कर चुके है परन्तु लोगों की आज यही दशा है। सब अपनी सोचते है दूसरों के कष्ट का ख्याल बिरला ही करता है। गुप्ता जी के पड़ोसी शर्मा जी से तो एक बार उनकी मारपीट की नौबत आ गई थी परन्तु फिर भी ना गुप्ता जी ने अपनी आदत में बदलाव किया, ना ही उनके कुत्ते ने धीरे–धीरे गुप्ता जी और हम एक दूसरे के पास आ चुके थे। सामान्य अभिवादन के

बाद हमने एक–दूसरे से हाल–चाल पूछना शुरू किया। बच्चे उनके मंहगे कुत्ते से मुखातिब हो उसे पुचकारने, दुलारने लगे और गुप्ता जी सामान्य बातें कर रहे थे कि अचानक आठ दस मकान दूर किसी मकान से लोगों के रोने की आवाज आने लगी महिला, पुरूष बच्चे सभी की आवाज मिली–जुली थी और काफी तेज भी। हम सभी चौकें एक–दूसरे का मुंह देखने लगे। सबके चेहरे पर प्रश्न के भाव अंकित थे। एक पल का सन्नाटा था, मैनें ही सन्नाटे को तोड़ते हुये अपनी धर्मपत्नी से कहा मैं देखता हूं क्या हुआ आप लोग घर जाओ। पत्नी ने पहले तो मना किया कि रात को कहां जाओगे, सुबह देख लेना परन्तु मेरे जोर देने पर वो मान गई। गुप्ता जी ने भी साथ चलने की हामी भर ली।

हम तेज डग भरते हुये उस ओर बढ़ चले। रास्ते में ही गुप्ता जी का घर था, पहले उन्होनें अपने कुत्ते को अन्दर किया गुप्ता जी का पूरा परिवार भी रोने की आवाजें सनुकर बाहर आ चुका था, मोहल्ले में भी कई लोग अपने घर से बाहर थे। मैं किसी से प्रश्न करता इससे पहले ही मिसेज गुप्ता (गुप्ता भाभी) ने मुझसे पूछ लिया। क्या हुआ भाईसाहब? कहां से आ रही है आवाजें ? मैं निरूत्तर था। मैनें बस इतना कहा देखते है भाभी जी। हमारे साथ मोहल्ले के लोग जुड़ते गये जैसे–जैसे हम आगे बढ़े। हम दो गलियां और कई मकान पार कर गये थे रात में दूर से आने वाली आवाज भी नजदीक ही लगती है ऐसा शोरगुल कम होने की वजह से होता है। हम चौहान जी के मकान तक पहुंच गये थे। चौहान जी से मेरी अच्छी जान–पहचान थी। यह क्या, ये तो चौहान जी का ही मकान था। भाई साहब, भाभी जी, उनकी दो बेटियां उनके बूढ़े पिता जी सभी रो रहे थे, भाभी जी तो कई बार अचेत भी हो गई थी। एम्बूलेन्स, पोलिस घर पर आ चुकी थी। अड़ोसी–पड़ोसी की भीड़ लग चुकी थी। कुछ लोग समझाने की नाकाम कोशिश कर रहे थे। मैं भी उन्हीं में से एक था। किसी के बताने की जरूरत नहीं थी। सब दिख रहा था क्योंकि उसके इकलौते बेटे ने अपने कमरे में पंखे से फंदा बांधकर खुद को लटका दिया था। चौहान जी का बेटा बहुत सुन्दर, सुशील पढ़ने–लिखने में भी ठीक था, बीटैक कर रहा था, परन्तु यह क्या कर बैठा, क्यों कर बैठा क्या कमी थी। ऐसे कितने सवाल छोड़ गया था।

दो दिन बाद मैं पुनः उस घर में गया। मातम का मंजर ही हद्य विदारक होता है। यद्यपि बेटियां आज किसी से कम नहीं है, प्रगति के पथ पर वह हर जगह अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है, अपने कर्तव्यों का पालन करते हुये समाज में कई उदाहरण भी प्रस्तुत कर रही हैं परन्तु फिर भी उस घर में यही लग रहा था कि उनका चिराग बुझ गया है उनकी वंशावली में विराम लग गया है। दोनों बेटियां अपने मां, बाप और दादा जी को ढांढस बंधा रही थी परन्तु उनके खुद के ढांढस का बांध टूटा जा रहा था, सबके करूण हद्य कराह रहे थे। मैनें बहुत हिम्मत करते हुये पूछ ही लिया भाई साहब कैसे हुआ यह! चौहान जी फफक कर रो पड़े। अपने को ही गुनहगार बताने लगे। कहने लगे शायद इसमें मेरी ही कमी है भाई साहब मेरे ही लाड़ प्यार ने इसे बिगाड़ा। वह मुझसे 12 लाख वाली मोटर साइकिल मांग रहा था और मैनें मना कर दिया। बस इसी से नाराज होकर ऐसा कर बैठा। खुद तो चला गया परन्तु मुझे और मेरे परिवार को जिन्दगी भर का नासूर दे गया। मेरे पास पैसों की कमी नहीं है। परन्तु मैनें पहली बार मना किया था कि बच्चों को ना सुनने की भी आदत भी होनी चाहिये पर मैं उसे सीख नहीं दे पाया। वह तो मुझे ही सीख दे गया कि यह 'ना' की आदत मुझे उसे बचपन से ही डालनी चाहिये थी। परन्तु बचपन से आज तक वह जो मांगता रहा मैं पूरा करता गया। आज जब मना किया तो ..... लम्बी सांस छोड़ते हुये....

भाई साहब ने कहना जारी रखा .... ये जो बच्चे हैं आजकल के बच्चे इनमें सहनशक्ति की ही कमी हो गई है। इन्होनें हारना सीखा ही नहीं। जीतने से ज्यादा हारना सीखना आना चाहिये भाई साहब। जीवन में ना जाने कितनी तरह की परेशानियां आती है। जीवन के हर मोड़ पर एक परीक्षा होती है, आप हर परीक्षा में सफल हो जाये ऐसा सदा सम्भव नहीं हो पाता। ऐसे में धैर्य और सहनशीलता ही आपके जीवन की कठिन डगर को पार करने का साधन बनती है। भाई साहब हम बच्चे को अच्छे स्कूल में पढ़ाने में अपना स्वाभिमान महसूस करते हैं। यहां भी हम बच्चे के भविष्य से इतर हम खुद पर इतराते हैं कि हमारा बच्चा फलां स्कूल में पढ़ता है। हम इसे बाजार में मिलने वाली समस्त सुख सुविधायें देते हैं या यूं कह लो अविभावकों के बीच अघोषित प्रतियोगिता पल रही है। कमी तो कभी महसूस ही नहीं होने देते। शिक्षा तो उन्हें स्कूल बेहतर दे देता है परन्तु संस्कार देना अभिभावक का दायित्व होता है मैं इसी में पिछड़ गया शायद! मंहगी साइकिल, मोटर साइकिल, मोबाईल, लैपटॉप, कम्प्यूटर और जूते, कपड़े सबकुछ दिया मैनें उसे बस.... अपने पास बैठा कर कुछ सीख नहीं दे पाया यही मेरी कमी है शायद जो मेरे साथ यह दुर्घटना हुई है।

यद्यपि वह पढ़ने में अच्छा था, शरीर से ठीक था, सुन्दर था पर दिल से कमजोर निकला। नासमझी भरा कदम उठाकर मेरे पूरे परिवार को जिन्दगी भर का दर्द दे गया। रोते हुये भाई साहब मुझे उसके कमरे तक ले गये। उसकी आलमारियां खोलकर उसके सामान दिखाने लगे। वाकई चौहान जी ने कोई कमी नहीं छोड़ी थी बच्चे के लालन–पालन में कहते हुए वह बैठ गये और रोते हुये कहने लगे परंतु यही सकारात्मक शिक्षा प्रदान करने मे विफल रह गया मै। उनको ढांढस बंधाने के अलावा अब कोई और चारा नही था क्योकि बाकी की जिन्दगी उन्हे इसी पश्चाताप के साथ गुजारनी थी। चाहे वो सही थे चाहे गलत पर सजा उनके परिवार को ही मुकर्रर हुई थी। उनके घर में फिर से सन्नाटा व्याप्त था।

मै वापसी में घर की ओर कदम बढा रहा था परंतु मन विचारों में डूबा उद्विग्न था। निश्चय ही आज के बच्चे स्मार्ट हैं, हम लोगों के समय से ज्यादा पहले ज्ञानार्जन कर रहे हैं। अपनी आजीविका और अपने जीवन के प्रति ईमानदार सोच भी रखते है तो आज ऐसा क्या है कि ..... आये दिन समाज में यदा कदा सुनाई दे जाता है कि फलां के बेटे ने या फलां की बेटी ने अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली..... क्यों इतना पढ़े–लिखे समझदार बच्चे जरा सा दबाव नहीं झेल पा रहे। जिन्दगी में अपरिपक्व प्यार में, जीवन में मां–बाप की पूंजी अभाव के कारण उनकी मांग पूरी ना हो पाने के कारण, गलत दोस्तों के बहकावे में आकर उनका खुद का निर्णय क्षीण हो जाता है और वे गलत कदम उठा बैठते हैं। कहां चली जाती है तब उनकी शिक्षा, उनकी निर्णय लेने की क्षमता। हमारे समय में तो ऐसा कभी नहीं होता था। तब हम इतने पढ़े–लिखे भी नहीं होते थे। क्या अब की पीढ़ी दिमाग से बहुत तेज और दिल से कमजोर हो गई है.....या पुरानी पीढ़ी ही नई पीढ़ी से सामंजस्य बैठा पाने में असफल हो रही है। मन मे विचारों का प्रतिद्वंद, प्रतिरोध, अवसाद चरम पर था परंतु वातावरण में चारों ओर सन्नाटा पसर चुका था।

****

राकेश नेगी,
मानचित्रकार श्रेणी–1

मैं कहती हूँ मुझसे आज,

आरती रोहिला
एम•टी•एस•

मैं कहती हूँ मुझसे आज,
झुकना कोई बुरा नही हैं,
लेकिन किया है जो तूने,
आज खुद के साथ,
गिरा कर अपना आत्म सम्मान,
याद रख कभी भीख में नहीं मिलता किसी का साथ,
लोग जलील करके,
याद दिला देंगे एक दिन उनकी,
नज़रों में हमारी औकात,
ज़माने की इस भीड़ में न मिले,
जब किसी अपने का हाथ,
काट ले उम्मीदों का मांझा आज,
छोड़ कर पीछे सब ज़माने के रस्मों रिवाज,
खुश रह खुद से आज चाहे,
फिर कैसे भी रहे हो हालात,
पगली तू उदास सी क्यूँ है आज,
गले लगा खुद को आज,
देख खुद खुदा का है तेरे सर पे हाथ,
बस इस नाजुक घड़ी में दे थोड़ा खुद का साथ,
याद रखना एक दिन जमाना भी होगा तेरे साथ।

****

माँ की ममता

किरन पाल
डिजीटाईजर

वो कमाने जब निकलती है, तो बस चेहरा सवंरता है
किसी औरत से पूछो, दिल के अंदर क्या बिखरता है।

वो बच्चे छोड़कर घर पे, यहाँ आ तो गयी देखो
मगर एक माँ का दिल ऑफिस में सारा दिन कसकता है।

बच्चे के कुछ कहने से पहले, वो उसकी बात समझ जाती है,
है कोई जादू की छड़ी उस पर, तभी तो जो माँगो सारी
ख्वाहिश पूरी हो जाती है।

माँ तो माँ है, उसके आगे कुछ भी नही,
माँ को ही बतानी, सबसे पहले हर बात नई।

ये एक मजदूरनी, झाँसी की रानी से कहाँ कम है,
है बच्चा पुस्त पे, मेहनत में सारा दिन गुजरता हैं।

****

समाज की खूबसूरती में प्रकृति का योगदान

पूनम शर्मा
डिजीटाईजर

इस संसार में ईश्वर की अद्भभुत रचनाओं में एक रचना है प्रकृति जो प्र और कृति शब्द से मिलकर बना है। प्र का अर्थ है 'श्रेष्ठ' और कृति का अर्थ है 'रचना' यानि की ईश्वर की सबसे सर्वश्रेष्ठ रचना और इस प्रकृति में ही मनुष्य के जीवन की शुरूआत होती है। मनुष्य जन्म के बाद अपनी माता की छत्रछाया में अपने माँ की गोद में पलता है और माँ उसका पालन–पोषण करती है जिस प्रकार से हमारी पहली पाठशाला माँ होती है जिससे हमे हर प्रकार का ज्ञान मिलता है उसी प्रकार से हमे प्रकृति से भी कई प्रकार का ज्ञान मिलता है। उसी प्रकार प्रकृति भी शिक्षा और ज्ञान का स्रोत है। हमे प्रकृति से विभिन्न प्रकार का ज्ञान मिलता है।

आज मनुष्य ने जो कुछ भी हासिल किया है वह प्रकृति से सीखकर ही किया है। न्यूटन जैसे महान वैज्ञानिक ने गुरूत्वाकर्षण समेत कई पाठ प्रकृति से सीखें। वही महान कवियों ने श्रेष्ठ कविताएं प्रकृति से प्रेरणा लेकर लिखी है।

प्रकृति ने मनुष्य के जीवन में शिक्षक की भूमिका निभा कर मनुष्य के जीवन में सकरात्मक बदलाव किए। प्रकृति हमें कई पाठ पढ़ाती है जो हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। जैसे पतझड़ का मतलब पेड़ का अंत नहीं है। इस पाठ को जिस व्यक्ति ने अपने जीवन में आत्मसात किया है उसे असफलता से कभी डर नहीं लगा। ऐसे व्यक्ति अपनी असफलता के बाद विचलित नहीं हुए और सफलता पाने की कोशिश करते हैं, जब तक उन्हें सफलता नहीं मिलती। इसी प्रकार से फलों से लदे, मगर नीचे की ओर झुके, पेड़, सफलता और प्रसिद्धि मिलने या संपन्न होने के बावजूद–विनम्र और शालीन बने रहना सिखाते है।

अगर देखा जाए तो कुदरत की प्राथमिकता हमसे पहले हमसे कही ज्यादा महत्वपूर्ण है।

हम मनुष्यों का अपने विकास के बारे में सोचना कोई गलत बात नहीं है, विकास होना चाहिए किन्तु कुछ हद तक ताकि प्रकृति में मनुष्यों की आधुनिक विकास की सीमा रेखा के बीच संतुलन बना रहे। पंरतु मनुष्य आज अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रकृति में बहुत कुछ फेरबदल कर रहे है जिसके परिणाम स्वरूप आज पर्यावरण में काफी ज्यादा प्रदूषण फैल चुका है और यह केवल मनुष्य जीवन के लिए नही अपितु अन्य जीवों के लिए भी खतरे का संकेत है।

यही कारण है कि आज संसार में कई बिमारियां दिन प्रतिदिन महामारी का रूप ले रही है और मानव का जीवन और कष्टदाई हो गया है। कोरोना जैसी महामारी पूरे विश्व में फैल गयी है और लोग अपने ही घरों में पंछी के समान कैद हो गये है। इस महामारी से कई लोगों ने अपनी जान गंवाई है।

महामारी से लोगों का लॉकडाउन में रहने से जहाँ एक तरफ प्रदूषण कम हुआ नदियां साफ हुई, ओजोन लेयर की परत भी ठीक हुई। कोरोना महामारी के डर से मानव शुद्ध हुआ और साथ ही साथ पर्यावरण भी शुद्ध हुआ यही सब महामारी के न आने पर किया जा सकता है। यदि मनुष्य पर्यावरण के लिए सजग रहे तो महामारी विकराल रूप धारण नही करेगी। इसलिए पर्यावरण को शुद्ध रखना अति आवश्यक है।

यदि हमने समय रहते कुछ नहीं किया तो आने वाले समय में मनुष्य के साथ–साथ जीव जन्तुओं का भी लुप्त होना निश्चित है। जिस तरह से हम अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए किसी भी हद तक प्रयास कर रहे है। इसी प्रकार से हम पर्यावरण की भी सुरक्षा कर सकते है। खुद का भरण–पोषण करने से ज्यादा महत्वपूर्ण है पर्यावरण की खूबसूरती को बनाए रखना क्योंकि मानव जीवन का अस्तित्व प्रकृति की खूबसूरती में ही है और यह भावना हर व्यक्ति के मन में स्वंय होनी चाहिए, और यह हमारा दायित्व है। ताकि हमारा आने वाला कल आज के मुकाबले बेहतर हो सके। प्रकृति के विकास से ही हमारा अस्तित्व है ना कि विनाश में। अतः सार यह है कि ''प्रकृति वह ताकत है जो कि हमारे समाज की खूबसूरती को बरकरार रखने में अहम योगदान एवंम भूमिका निभाती है।''

****

आत्मविश्वास

सीमा बिष्ट
डिजीटाईजर

जीवन में चाहे कितना भी शोर हो,
तन्मयता निरंतर लक्ष्य की ओर रखो,
अपने लक्ष्य की फरियाद सुनकर
मन में दृढ़ संकल्प की धार रखो,
अफवाहो से मुख मोड़कर
सही गलत की परख रखो,
दुनिया की बातों को नजरअंदाज कर
स्वयं को समझने का प्रयास रखो,

हृदय में मंजिल की आस रखकर
उसको प्राप्त करने का आत्मविश्वास रखो,

है भेदना अगर लक्ष्य तो
अर्जुन सा विश्वास रखो,
नित्य एक–एक कदम बढाकर
कर्म निष्ठा और दृढनिश्चय को साथ रखो,
समुद्र के निश्छल मोती से
गलत को गलत कहने का शौर्य रखो,
अपनी वाणी मे मधुर मिठास घोलकर
चेहरे पर शोभा–श्री मुस्कान रखो,

हृदय मे मंजिल की आस रखकर
उसको प्राप्त करने का आत्मविश्वास रखो।

****

जिस दिन हमारे सिग्नेचर ऑटोग्राफ में बदल जायें, मान लीजिए आप कामयाब हो गये।

–डा0 ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम

आजादी का अमृत महोत्सव

भूपेन्द्र सिंह
सर्वेक्षण सहायक

देश के प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी के शब्दों मे अमृत महोत्सव का अर्थ आजादी की ऊर्जा का अमृत है, यानी स्वतंत्रता सेनानियों की स्वाधीनता का अमृत महोत्सव मतलब नए विचारों का अमृत, नए संकल्पों का अमृत और आत्मनिर्भरता का अमृत है। देश की आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने पर 15 अगस्त 2022 से देश के विभिन्न हिस्सो में संस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जायेंगे। आजादी के अमृत महोत्सव के सांस्कृतिक कार्यक्रम में नाचगाने, प्रवचन और प्रस्तावना पठन भी शमिल है। इस कार्यक्रम को 15 अगस्त 2023 तक चलाया जायेगा।

25 दिन में तय करेंगे 241 मील की पद यात्रा :– गांधी जी के साथ नमक कानून तोडने के लिए 80 लोगों ने भाग लिया था। दांडी यात्रा की तर्ज पर ही अमृत महोत्सव को 12 मार्च आरंम्भ किया गया। दांडी यात्रा की तरह ही 25 दिन में 241 मील का रास्ता (मेरे ज्ञान) इन यात्रियों ने 5 अप्रैल को पूर्ण किया, इस यात्रा का नेतृत्व भी गिरिराज सिंह, विजय रूपाणी, देव सिह चौहान और अर्जुन सिंह चौहान कर रहे है।

अमृत महोत्सव पर करोड़ों का बजट :– तेलंगाना सरकार ने आजादी के अमृत महोत्सव मनाने के लिए 25 करोड़ के बजट को हरी झंडी दिखा दी है, जिसके तहत अमृत महोत्सव के चित्र महत्वपूर्ण तेलंगाना के क्षेत्रों में लगाये जायेगें और तिरंगा झंडा फहराया जाएगा।
मध्य प्रदेश राज्य की सरकार ने 75 सप्ताह तक आजादी के अमृत महोत्सव के तहत स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा।

लोकल फॉर वोकल :– आजादी के अमृत महोत्सव में चरखे से लोकल फॉर वोकल को बढावा दिया जायेगा इसके लिए साबरमती आश्रम में एक चरखा रखा गया है। जब कोई व्यक्ति लोकल व्यापारी और कम्पनी का सामान खरीदेगा और उसकी तस्वीर सोशल मीडिया पर लोकल फॉर वोकल का टैग लगाकर सोशल मीडिया मे डालेगा उसके तुरंत बाद ये चरखा घूमेगा।

परमाणु शक्ति सम्पन्न :– भारत एक परमाणु शक्ति होने के साथ ही बड़ी सैन्यशक्ति भी है। यही नही चांद ओर मंगल पर मानव रहित मिशन भेजने वाले 5 देशों की सूची में अपने देश का नाम भी शामिल है जो हर भारतवासी के लिए एक गर्व की बात है। अपने देश ने मंगल मिशन में पहले ही प्रयास और सबसे कम खर्च में सफलता प्राप्त की एवं उत्पादन के क्षेत्र में भारत ने कई देशों को पीछे छोड दिया है।

सबका साथ सबका विकास के नारे के साथ भारत सरकार लगातार अपनी योजनाओं के माध्यम से देशवासियों को सेवांए पहुंचा रही है जो, किसी विशेष जाति, धर्म अथवा राज्य नही बल्कि सम्पूर्ण भारत के लिए महत्वपूर्ण है, इस राष्ट्रीय महोत्सव के दौरान सभी सरकारी भवनों और घरों पर तिरंगा फहराया जाएगा तकि इसका महत्व लोगों तक पहुँचाया जा सके।

अमृत महोत्सव को मनाने के मुख्य कारण में एक अंग्रेजो की गुलामी से देश को मुक्ति मिली। इसमे बहुत सारे योद्धाओ ने देश के लिए बलिदान किया परन्तु वे अदृश्य है उन्हे याद करने का दिन आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने पर देश के लोगो को स्वतंत्रता और लोकतंत्र के सही मायने बताना बहुत जरूरी है। आज हमारे देश का नौजवान विभिन्न विचारधाराओं में बंटे हुए है, देश में मौजूद अनेक अनैतिक तत्व उन्हे गुमराह कर रहे। आज की युवा पीढ़ी को यह जानना जरूरी है कि आने वाले समय मे किन चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। स्कूल में पढ़ाए गए पाठ से उन्हे आजादी के बारे में बहुत कुछ जानकारी मिल जाती है, लेकिन करीब से इस संघर्ष की कहानी को नही जानते हैं। इतिहास की बहुत सी बाते पाठ्यक्रम में नही जिन्हे जानना या बताना जरूरी है। यह हमारा सौभाग्य है कि हम स्वतंत्र भारत में पैदा हुए। इस पुण्य अवसर पर हम महात्मा गांधी (बापू) के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते है और देश का नेतृत्व करने वाले सभी महान व्यक्तियों के चरणों में नमन करते है, जिन्होने देश के स्वतंत्रता संग्राम में अपना बलिदान दिया।

****

माँ

सीमा सिंह
वरिष्ठ रिप्रोग्राफर

जब–जब भी दिल दुख में डूबे,
माँ याद क्यो मुझको आती है,
मेरे इस दुख के सागर के अहसासों को,
क्यो और भी गहरा करके जाती हो।

उस पल, उस क्षण तुम्हारी कमी,
कुछ ओर ही ज्यादा खलती है,
यादों से लबरेज हृदय में फिर,
कुछ फाँस और गहरी गड़ती है।

काश जब तुम बोला करती थी,
उन बातों को उन लफ्जों को,
उन ममतापूरित अहसासों को,
कुछ गौर लगा कर मै सुनती,

क्यों बैठू आज विलाप कर,
क्यों पल पल तुझको याद करू,
दिल जार–जार क्यो रोता है,
क्यो क्रंदन इसमें होता है।

एक वो भी, एक दिन था जब,
कुछ झूठ–मूठ की बातों पर,
सिसक–सिसक कर, फफक कर,
मैं तुमसे लिपट कर रोती थी,

यद्यपि तुम गले लगाती थी,
और प्यार भी खूब लुटाती थी,
फिर भी तुम मुझे नही समझती,
आरोप लगाया करती थी,

पर आज घड़ी ये आयी है,
कि दुनिया के सब दुख सह लू मैं,
पर माँगू बदले में एक पल ही,
आँचल पकड़, गले लिपटू फिर पकड़ के तुझको रो लू मैं,

पर चली गई इतनी दूर तुम माँ,
ये सुख का क्षण भी, कभी न पाऊँगी,
पर मन की यादों में जकड़ तुम्हे,
यादों में गले लगाऊँगी।

माँ तुम भी सपने मे आके मुझे,
वात्सल्य से फिर लिपटा के मुझे,
अपनी यादों की पूँजी की,
कुछ अमृत बूंदे दे जाना..........

****

लोकोक्तियाँ व उनके अर्थ

संतोख सिंह अरोड़ा
मानचित्रकार श्रेणी–1

- अपनी करनी पार उतरनी– स्वयं का परिश्रम ही काम आता है।
- अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता – अकेला व्यक्ति शक्तिहीन होता है।
- अधजल गगरी छलकत जाये – ओछा आदमी अधिक इतराता है।
- अन्धे के आगे रोवै अपने नैना खोवै– निर्दय व्यक्ति या अयोग्य व्यक्ति से सहानुभूति की अपेक्षा करना व्यर्थ है।
- आँख का अंधा नाम नयनसुख :– गुणों के विपरीत नाम होना।
- आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास :– उद्धेश्य से भटक जाना।
- आधा तीतर आधा बटेर :– बेमेल चीज जिसमे सामंजस्य का अभाव हो।
- ऊधो का न लेना, न माधो को देना :– किसी से कोई मतलब न रखना।
- कागज की नाव नहीं चलती :– बेईमानी से किसी कार्य में सफलता नही मिलती।
- का वर्षा जब कृषि सुखानी :– अवसर बीत जाने पर साधन की प्राप्ति बेकार है।
- कहीं की ईट कहीं का रोड़ा भानुमति ने कुनबा जोड़ा :– इधर–उधर से सामग्री जुटा कर कोई निकृष्ठ वस्तु का निर्माण करना।
- काबुल में क्या गधे नहीं होते :– मूर्ख सब जगह मिलते है।
- कोउ नृप होउ हमें का हानि :– अपने काम से मतलब रखना।
- कभी घी घना तो कभी मुट्ठी चना :– परिस्थितियाँ सदा एक सी नहीं रहती
- खग जाने खग हीं की :– मूर्ख व्यक्ति मूर्ख की बात भाषा सझता है।
- गुड़ खाए और गुलगुले से परहेज :– झूठा ढोंग रचना
- गुड़ दिये मरे तो जहर क्यों दे :– प्रेम से कार्य हो जाये तो फिर दण्ड क्यों।
- घर–घर मिट्टी के चूल्हे हैं :– सबकी एक सी स्थिति का होना
- घर आये नाग न पूजै, बाँबी पूजन जाय :– अवसर का लाभ ना उठाकर उसकी खोज मे जाना
- चील के घोसले में माँस कहाँ :– भूखे के घर भोजन मिलना असंभव होता है।
- चुपड़ी ओर दो दो – लाभ में लाभ होना।
- जहाँ मुर्गा नहीं बोलता वहाँ क्या सवेरा नहीं होता :– किसी के बिना कोई काम नहीं रूकता
- झूठ कहे सो लड्डू खाय साँच कहे सो मारा जाय :– आजकल झूठे का बोल–बाला हैं
- झटपट की घानी, आधा तेल आधा पानी :– जल्दबाजी का काम खराब ही होता है।
- ढाक के तीन पात :– सदा एक सी स्थिति बने रहना।
- तन पर नहीं लत्ता, पान खाये अलबत्ता :– आभावग्रस्त होने पर भी ठाठ से रहना।
- तीन बुलाये तेरह आए :– अनिमंत्रित व्यक्ति का आना।
- दालभात मे मूसल चंद :– किसी के कार्य में व्यर्थ का दखल देना।
- न सावन सूखा न भादों हरा :– सदैव एक सी तंग हालत रहना।
- बिच्छू का मंत्र न जाने, साँप के बिल में हाथ डाले :– योग्यता के आभाव में उलझनदार काम करने का बीडा उठा लेना।

****

उत्तराखण्ड के भौगोलिक संकेतक टैग

श्रीजेश बाबू एन० टी०
कार्यालय अधीक्षक

भौगोलिक संकेत (GI) टैग किसी विशेष क्षेत्र या राज्य या देश के उत्पाद निर्माता या व्यवसायियों के समूह को अच्छी गुणवत्ता के कृषि, औद्योगिक, प्राकृतिक वस्तुओं को बनाने के लिए दिया जाता है।

यह टैग, वस्तु (पंजीकरण और संरक्षण) एक्ट, 1999 के अनुसार 'भौगोलिक संकेत रजिस्ट्री' द्वारा जारी किया जाता है, जो कि उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के अंतर्गत आता है।

एक भौगोलिक संकेत (जीआई) उन उत्पादों पर उपयोग किया जाता है, जिनकी एक विशिष्ट भौगोलिक उत्पत्ति होती है और इसमें उस क्षेत्र की विशेषताओं के गुण और प्रतिष्ठा भी पाई जाती हैं। कई बार ऐसा भी होता है कि एक से अधिक राज्यों में बराबर रूप से पाई जाने वाली फसल या किसी प्राकृतिक वस्तु को उन सभी राज्यों का मिला–जुला जी आई टैग दिया जाए। यह बासमती चावल के साथ हुआ है। बासमती चावल पर पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और जम्मू–कश्मीर के कुछ हिस्सों का अधिकार है।

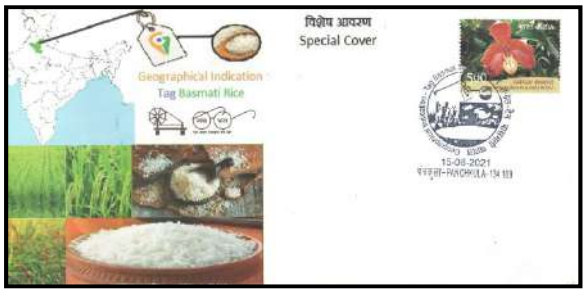

किसी भी वस्तु को जी आई टैग देने से पहले उसकी गुणवत्ता, क्वालिटी और पैदावार की अच्छे से जांच की जाती है। यह तय किया जाता है कि उस खास वस्तु की सबसे अधिक और ओरिजनल पैदावार निर्धारित राज्य की ही है। इसके साथ ही यह भी तय किए जाना जरूरी होता है कि भौगोलिक स्थिति का उस वस्तु की पैदावार में कितना हाथ है। कई बार किसी खास वस्तु की पैदावार एक विशेष स्थान पर ही संभव होती है। इसके लिए वहां की जलवायु से लेकर उसे आखिरी स्वरूप देने वाले कारीगरों तक का हाथ होता है। देश में अब तक 400 से अधिक उत्पादों को जीआई टैग मिल चुका है।

उत्तराखंड की विरासत काफी समृद्ध रही है, लोककला आधारित हस्तशिल्प की बात हो, या पहाड़ी लोकजीवन के स्वादिष्ट भोजन की अब इस धरोहर को वैश्विक स्तर पर पहचान मिलने का सिलसिला शुरू हुआ है क्योंकि राज्य के 8 ऐसे अनूठे प्रोडक्ट्स को जीआई टैग मिला है और 15 प्रोडक्ट्स के लिए जी आई टैग की कवायद जा रही है।

1. वास्तव में सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण माने जाने वाले अनोखे व्यावसायिक प्रोडक्ट्स को संरक्षित करने के उद्देश्य से जियोग्राफिकल इंडिकेशन टैग से नवाज़ा जाता है। अब यह उपलब्धि उत्तराखंड के जिन 8 प्रोडक्ट्स के हाथ लगी है, उसके बारे में विस्तार से जानिए, मेरे निजी प्रयासों से एकत्रित की गई संग्रहों से:– **सबसे पहले तेज पत्ता को मिला था जी आई टैग**

भौगोलिक उपदर्शन पंजिकरण संख्या : 520

भौगोलिक उपदर्शन टैग (Certificate) number : 267

उत्तराखण्ड तेजपत्ता (सिनामोमम तमाला) : सिनामोमम तमाला, भारतीय तेज पत्ता, जिसे तेजपत, तेजपट्टा, मालाबार पत्ती, भारतीय छाल, भारतीय कैसिया या मालाबाथ्रम के नाम से भी जाना जाता है, लौरासी परिवार का एक पेड़ है जो भारत, बांग्लादेश, नेपाल, भुटान और चीन का मूल निवासी है। तेजपात एक बारहमासी छोटा सदाबहार पेड़ है, जिसकी ऊंचाई 8–12 मीटर और परिधि 110–150 सेमी है। यह उत्तराखण्ड राज्य में हिमालय क्षेत्र में 500 मीटर से 2400 मीटर की ऊंचाई पर पाया जाता है। 20 मीटर (66 फीट) तक लंबा हो सकता है।

तेजपात के पत्ते आमतौर पर जैतून के हरे रंग के होते हैं, जिसकी लंबाई में तीन नसों वाली पत्ती होती हैं। इसकी पत्तियों में एक लौंग जैसी सुगंध होती है जिसमें चटपटा स्वाद होता है। उनका उपयोग रसोई और औषधीय प्रयोजनों के लिए किया जाता है। तेजपात के पत्ते पांच प्रकार के होते हैं और वे व्यंजनों को तेजपत्ता या दालचीनी जैसी तेज सुगंध प्रदान करते हैं। तेजपात का उपयोग मुख्य रुप से 'चवनप्राश' और अन्य दवाओं के निर्माण में और मसाला उद्योग में भी किया जाता है। तेजपत्ता को उत्तराखण्ड राज्य का भौगोलिक उपदर्शन (जी.आई.)घोषित किया गया है।

2. कुमांऊ का च्यूरा तेल

भौगोलिक उपदर्शन पंजिकरण संख्या : 650

भौगोलिक उपदर्शन टैग (Certificate) number : 399

कुमांऊ का च्यूरा तेल : च्यूरा (Chyura) के वृक्ष कुमाऊँ के पहाड़ी क्षेत्रों में समुद्र कि सतह से 300 से 1500 मीटर की ऊंचाई वाले विभिन्न स्थानों पर पाये जाते हैं। सामान्यतः इसके पेड़ 10 मीटर से 20 मीटर तक ऊंचे पाये जाते हैं। कुमाऊँ में इस वृक्ष को च्यूर या च्यूरा, नेपाली में च्यूरि तथा अंग्रेजी में इंडियान बटर ट्री के नाम से जाना जाता है। च्यूरा को अलग–अलग क्षेत्रों में फुलावार, गोफल आदि अन्य नामों से भी जाना जाता है। इसका वानस्पतिक नाम डिप्लोनेमा ब्यूटेरेशिया
(Diploknema butyracea) अथवा एसेन्ड्रा ब्यूटेरेशिया
(Aesandra butyracea) है। च्यूरा को मैदानी क्षेत्रों में पाये जाने वाले बहुपयोगी वृक्ष महुआ की पहाड़ी प्रजाति भी माना जा सकता है, लेकिन पहाड़ो पर पाये जाने वाले च्यूरा के वृक्ष का अत्यधिक महत्व माना जाता है। च्यूरा; बैलनतंद्ध के वृक्ष की पत्तियां घरेलू पशुओं के लिए उपयोगी चारे के रुप में प्रयोग की जाती है। दधारु पशुओं के लिए इसकी पत्तियां पौष्टिक आहार और दूध को बढ़ाने वाली मानी जाती हैं। च्यूरा को पहाड़ो में धार्मिक आस्था के प्रतिक पवित्र वृक्ष के रुप में भी मान्यता है।

3. एक बंजारे समुदाय भोटिया द्वारा बनाए जाने वाले कालीन/दरी

भौगोलिक उपदर्शन पंजिकरण संख्या : 589

भौगोलिक उपदर्शन टैग (Certificate) number : 375

उत्तराखण्ड भोटिया दन : कालीन बुनाई मुख्य रूप से हिमालयी क्षेत्र की भोटिया जनजातियों द्वारा प्रदर्शित पारंपरिक कला का एक रूप है। इस प्रक्रिया में भेड़ के बालों को काटकर, ऊन तैयार कर, ऊन को साफ करना तथा रंगना एवं उसके उपरांत उसको सूत के रुप में तराशने तक पूरी निर्माण प्रक्रिया को पारंपरिक उपकरणों का उपयोग कर हाथों से किया जाता है। इस सूत/धागे को हिमालय की ऊंचाईयों पर पाले जाने वाले भेड़ों के शुद्ध ऊन से बनाया जाता है। इन धागों को रंगने के लिए पौधों से निकाले गए प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता है।

इसके बने कालीन/दन्न अत्यधिक टिकाऊ और बेहद गर्म होते हैं जो ठंडी जलवायु और पहाड़ी क्षेत्रों के लिए अत्यंत उपयुक्त होते है। ये कालीन अन्य कालीनों की तुलना में (जो विभिन्न पॉलिमरों के मिश्रण होते हैं) शुद्ध ऊन से बनाए जाते हैं। इसकी बुनाई प्रक्रिया की पहचान इसमें बनी गांठों के उच्च घनत्व से की जा सकती है। ये कालीन नरम, गर्म और टिकाऊ होते हैं, जिनकी शेल्फ लाइफ लगभग 15 से 20 साल होती है। हिमालयी समुदायों के लिए स्थायी आजीविका के स्त्रोत के अतिरिक्त यह कालीन बुनाई की परंपरा, पारंपरिक कला और कौशल के संरक्षण में योगदान भी करती है।

4. खास मौकों पर बनाई जाने वाली पारंपरिक कलाकृति ऐंपण

भौगोलिक उपदर्शन पंजिकरण संख्या : 648

भौगोलिक उपदर्शन टैग (Certificate) number : 389

उत्तराखण्ड ऐपण : उत्तराखण्ड ऐपण की एक पेंटिंग के रुप में अपनी विशिष्ट पहचान है जो हमेशा दीवारों और जमीन पर की जाती है जो भाग्य और उर्वरता का प्रतीक है। इस कला का उपयोग पूजा कक्ष और घरों के प्रवेश द्वार पर फर्श और दीवारों को सजाने के लिए किया जाता है और विभिन्न क्षेत्रों के कई अन्य समुदायों द्वारा इसका अभ्यास किया जाता है। मंडप/मंदिर पर भी सीधी रेखा पैटर्न में अनुष्ठान पेंटिंग की जती है। इसमें पृष्ठभूमि लाल मिट्टी से तैयार की जाती है जिसे ''गेरु'' के नाम से जाना जाता है और चावल के आटे से बने सफेद लेप के साथ आकार तैयार किए जाते हैं।

ऐपण सभी शुभ अवसरों पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराती है क्योंकि यह पारंपरिक मान्यता है कि इन रुपांकनों से सौभाग्य, भगवान का आशीर्वाद और उर्वरता प्राप्त होती है। यह बिना किसी जाति और पंथ के, प्राचीन काल से कुमाऊं क्षेत्र में बहुत लोकप्रिय है जो कि अब पूरे उत्तराखण्ड में एक जुनून के साथ फैल गयी है और स्थानीय लोगों विशेष रुप से महिलाओं की आजीविका व व्यावसायिक उद्देश्य के लिए एक उपकरण के रुप में इसका उपयोग किया जा रहा है।

5. बांस के रेशों को गूंधकर जाने वाली कलाकृति चानी रिंगाल क्राफ्ट

भौगोलिक उपदर्शन पंजिकरण संख्या : 652

भौगोलिक उपदर्शन टैग (Certificate) number : 391

उत्तराखण्ड रिंगाल हस्तशिल्प : रिंगाल उत्तराखण्ड में बुनाई की एक विशिष्ट एवं सदियों पुरानी शिल्प कला है। कारीगर बुनाई के लिए इन क्षेत्रों में उगने वाले बौने रिंगाल की एक विशेष प्रजाति का उपयोग करते हैं। रिंगाल के लिए उत्तराखण्ड के जंगल प्राकृतिक मैदान हैं। टोकरियाँ, डिब्बे, चटाई और अन्य उपयोगी वस्तुओं के रुप में रिंगाल बुनाई की विभिन्न किस्में हैं जो जटिल रुप से बुनी जाती हैं। रिंगाल बुनाई चमोली, बागेश्वर, खलीझुरी, पिथौरागढ़ के समुदायों को आजीविका प्रदान करती है।

रिंगाल की जीवन अवधि लगभग 20–25 वर्ष है और इसके कारण रिंगाल द्वारा बनाया गया उत्पाद उनके लंबे स्थायित्व के लिए बहुत लोकप्रिय है। रिंगाल प्रजातियों में चिम्नोबाम्बुसा जौनसारेंसिस का उपयोग

रिंगाल बुनकरों द्वारा इसकी उपलब्धता, स्थायित्व और गुणवत्ता के कारण वस्तुएं बनाने के लिए किया जाता है और इसके बाद देव रिंगाल इसकी लचीली और चिकनी प्रकृति के कारण पसंद किया जाता है।

6. तांबे के कुछ प्रोडक्ट्स

भौगोलिक उपदर्शन पंजिकरण संख्या : 653

भौगोलिक उपदर्शन टैग (Certificate) number : 392

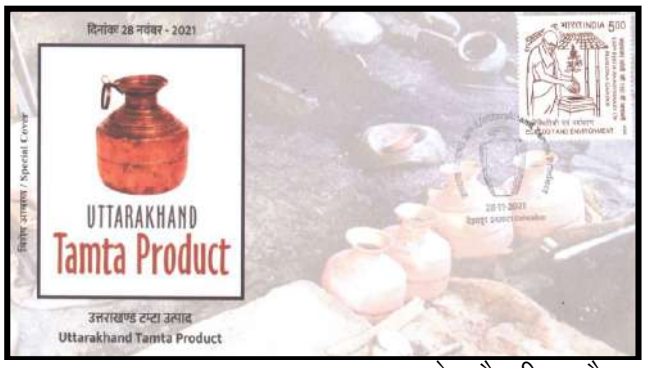

उत्तराखण्ड टम्टा उत्पाद : उत्तराखण्ड टम्टा उत्पाद अपने औषधीय और उपचारात्मक गुणों के लिए प्रसिद्ध है। इसी प्रकार रोजमर्रा के उपयोग की कई वस्तुएं अभी भी पारंपरिक रुप से टम्टा से तैयार की जाती हैं, इनका उपयोग पीढ़ियों से पूरे उत्तराखण्ड के गांवों और शहरी क्षेत्रों में किया जाता है। यदि टम्टा के बर्तन में कुछ समय तक पानी रखा जाये तो यह औषधीय गुणों को अवशोषित कर लेती है। टम्टा सुराही (जग जैसे टोंटीदार मुंह वाले बर्तन), गिलास और समतल वाले पारंपरिक पानी के कंटेनर जिन्हें लोटा कहा जाता है, आम उत्पाद हैं। रोजमर्रा के इस्तेमाल के लिए थाली और कटोरियां भी टमटा से बनायी जाती हैं। इनका उपयोग उन खाद्य पदार्थों को पकाने के लिए किया जाता है जिन्हें निरंतर कम ताप की आवश्यकता होती है।

7. स्थानीय फैब्रिक को कातकर बनाए जाने वाले कंबल चानी थुल्मा

भौगोलिक उपदर्शन पंजिकरण संख्या : 654

भौगोलिक उपदर्शन टैग (Certificate) number : 393

उत्तराखण्ड थुलमा : थुलमा (कंबल) एक बहुत मोटा ऊनी हस्तनिर्मित कंबल, पारंपरिक थ्रो फ्लाई शटल पर हाथ से स्पिन ऊनी और सूती धागों से बुना जाता है, पारंपरिक रुप से थुलमा सफेद ऊन या बिना रंग के ऊन से बुना जाता था, लेकिन ग्राहक की मांग के साथ इसे रंगे हुए ऊन से भी बुना जाता है। यह कंबल इसकी अच्छी गुणवत्ता वाले बालों के लिए विशिष्ट है। थुलमा (कंबल) मुख्य रुप से भोटिया समुदाय की महिला बुनकरों द्वारा बहुत धैर्य और ध्यान से बेहतरीन किस्म के ऊन का उपयोग करके बुनी जाती है। यह विशेष रुप से हाथ से कताई और हाथ से बुने हुए उत्पाद हैं जिन्हें भोटिया समुदाय द्वारा हिमालयी क्षेत्र में पीढ़ियों से बुना जा रहा है और ऊपरी हिमालयी क्षेत्र में माइनस डिग्री तापमान में उपयोग किया जाता है और प्रभावी तरीके से बहुत गर्म होते है। पारंपरिक थुलमा की लंबाई लगभग 7.0 फीट, चौड़ाई 5. 5 फीट और वजन लगभग 4–6 कि.ग्रा. होता है ।

8. मुन्स्यारी का राजमा

भौगोलिक उपदर्शन पंजिकरण संख्या : 651

भौगोलिक उपदर्शन टैग (Certificate) number : 390

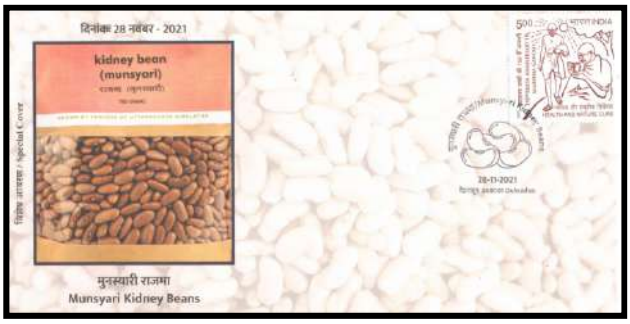

मुनस्यारी राजमा : राजमा अधिक ऊंचाई में खनिज से समृद्ध मिट्टी में उगाया जाता है और यह घुलनशील फाइबर का एक स्त्रोत है जो कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने में मदद करता है। इसमें अच्छी मात्रा में मोलिब्डेनम होता है जो सल्फाइट को डिटॉक्सीफाई करता है। यह अपने बेहतरीन स्वाद और खाना पकाने की गुणवत्ता के लिए प्रसिद्ध है। पिथौरागढ़ जिले में मुनस्यारी राजमा की खेती की प्रक्रिया में लगभग 80% महिलाएं लगी हुई हैं, जो इस भौगोलिक क्षेत्र की एक विशेष विशेषता है।

राजमा विभिन्न प्रकार की मिट्टी पर पनपता है। हालांकि अच्छी जल निकासी वाली दोमट मिट्टी इसकी खेती के लिए सबसे अच्छी होती है। यह फसल लवणता और मिट्टी के प्रति बहुत संवेदनशील होती है। बेहतर उपज प्राप्त करने के लिए पीएच 5.5 से 6.0 होना चाहिए। उच्च कार्बनिक पदार्थ/FYM वाली मिट्टी अधिक वनस्पति विकास को बढ़ावा देती है। इस फसल को बीजों के बेहतर अंकुरण के लिए अच्छी क्यारी और मिट्टी में अच्छी नमी की आवश्यकता होती है। गहरी जुताई के बाद 3 से 4 हैरोइंग से मिट्टी की अच्छी जुताई हो जाती है।

15 प्रोडक्ट्स के लिए GI टैग की कवायद जारी है।

1. लाल चावल

भौगोलिक उपदर्शन पंजिकरण संख्याः 852

2. बेड़िनाग चाय

भौगोलिक उपदर्शन पंजिकरण संख्या : **829**

2. मंडुआ

भौगोलिक उपदर्शन पंजिकरण संख्याः 829

3. झांगोरा

भौगोलिक उपदर्शन पंजिकरण संख्याः 841

4. काला भट्ट

भौगोलिक उपदर्शन पंजिकरण संख्याः 856

5. चौलाई/रामदाना

भौगोलिक उपदर्शन पंजिकरण संख्याः 863

6. अलमोड़ा लाखोरी मिर्च

भौगोलिक उपदर्शन पंजिकरण संख्याः 864

7. पहाड़ी तुअर दाल

भौगोलिक उपदर्शन पंजिकरण संख्याः 867

8-माल्टा फ्रूट

भौगोलिक उपदर्शन पंजिकरण संख्याः 860

9-गहत दाल

भौगोलिक उपदर्शन पंजिकरण संख्याः 844

11. उत्तराखण्ड लिखाई (लकड़ी कारविंग)

भौगोलिक उपदर्शन पंजिकरण संख्याः 919

12. चमोली रम्मन मुखोड.

भौगोलिक उपदर्शन पंजिकरण संख्या : 918

13 कुंमाऊनी रंग वाली बिछौना उत्पाद

भौगोलिक उपदर्शन पंजिकरण संख्या : 874

14 नैनीताल मोमबत्ती

भौगोलिक उपदर्शन पंजिकरण संख्या : 873

15.उत्तराखण्ड बिच्छु बूटि से तैयार कपड़ा

भौगोलिक उपदर्शन पंजिकरण संख्या : 832

जी आई टैग क्या है?

- भौगोलिक संकेतक (Geographical Indication) का इस्तेमाल ऐसे उत्पादों के लिये किया जाता है, जिनका एक विशिष्ट भौगोलिक मूल क्षेत्र होता है।
- इन उत्पादों की विशिष्ट विशेषता एवं प्रतिष्ठा भी इसी मूल क्षेत्र के कारण होती है।
- इस तरह का संबोधन उत्पाद की गुणवत्ता और विशिष्टता का आश्वासन देता है।
- जीआई टैग को औद्योगिक संपत्ति के संरक्षण के लिये पेरिस कन्वेंशन (Paris Convention for the Protection of Industrial Property) के तहत बौद्धिक संपदा अधिकारों (आईपीआर) के एक घटक के रूप में शामिल किया गया है।
- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जी आई का विनियमन विश्व व्यापार संगठन (WTO) के बौद्धिक संपदा अधिकारों के व्यापार संबंधी पहलुओं (Trade- Related Aspects of Intellectual Property Rights-TRIPS) पर समझौते के तहत किया जाता है।
- वहीं, राष्ट्रीय स्तर पर यह कार्य 'वस्तुओं का भौगोलिक सूचक' (पंजीकरण और संरक्षण) अधिनियम, 1999 (Geographical Indications of goods 'Registration and Protection' act, 1999) के तहत किया जाता है, जो सितंबर 2003 से लागू हुआ।
- 'दार्जिलिंग टी' जीआई टैग प्राप्त करने वाला पहला भारतीय उत्पाद है। जो वर्ष 2004 में दिया गया था। भौगोलिक संकेतक का पंजीकरण 10 वर्ष के लिये मान्य होता है।
- महाबलेश्वर स्ट्रॉबेरी, जयपुर की ब्लू पॉटरी, बनारसी साड़ी और तिरुपति के लड्डू तथा मध्य प्रदेष के झाबुआ का कड़कनाथ मुर्गा, आंध्र प्रदेश के कॉबिल वीणा, बिहार का मधई पान, गोवा के फेनि, काश्मीर के गुच्ची मशरुम, मैसूर का गंजीफा कार्ड, कांनचीपुरम साड़ी, एलेप्पी कोयर, अरनमुल्ला कन्नाड़ी (mirror), नागपुर का संतरा सांगली की हल्दी, नागालैन्ड की नागा मिर्च सहित आज तक कुल 420 भारतीय उत्पादों को जीआई टैग मिल चुका है।
- जीआई टैग किसी उत्पाद की गुणवत्ता और उसकी अलग पहचान का सबूत है। कांगड़ा की पेंटिंग, नागपुर का संतरा और कश्मीर का पश्मीना भी जीआई पहचान वाले उत्पाद हैं।
- विशेष भौगोलिक पहचान का यह टैग मिलने से इन उत्पादों की ब्रांडिंग वैश्विक स्तर पर हो सकेगी, जिससे इनके बेहतर दाम मिलेंगे, यह उत्तराखंड की अर्थव्यवस्था के लिहाज़ से भी बड़ा कदम हो सकता है।

दिनांक 17.08.2022 तक 942 आवेदनों में से 420 रजिस्ट्रर्ड किये गये है, 53 मामले निरस्त (Refused) किये गये है, जिसमें उत्तराखण्ड के ज्यान साल्ट टी (Jyan Salt Tea) व गोवा के कोकोनट वेनीगर आदि सम्मिलित है। 27 मामले समाप्त/वापस (With Drawn) कर दिये गये व 28 मामले (abandone) छोड़ दिये गये है अन्य 414 मामले अभी लम्बित (pending) हैं।

****

आईना

अभिनव प्रभाकर
डिजीटाईजर

ये दुनिया थी बनाई जब उस समय भगवान ने,
रचे फिर दो चौकीदार रखवाली को करने,
थे दोनो एक से मगर दिखते अलग थे
दिया ये काम के अब इसको सम्भालो,
संसार अब तुम्हारा है ये तुम दोनों संवारो,

लिया ये फैसला उन दोनो ने मिल के,

क्यों बांट लें न हम अधिकार दोनो के,
बंटवारा किया फिर कुछ ऐसे आपस में,
के बंट कर रह गया संसार स्त्री, पुरूष में,
फिर ऐसे कर लिया बंटवारा लो देखें,

आंसू औरत के और,
और मुस्कान खुद की,
घर के अंदर की सजावट औरत की, और
और बाहर की कमान खुद की,
माथा तो औरत का, और
बिंदी लगा दी उस पे खुद की,
संतान तुम पैदा करो,
और नाम पे उसके मुहर खुद की,
रिश्ते और नाम तो औरत को दिया,
मगर उस नाम और रिश्ते की कमान रखी खुद की,
वजूद को औरत के खत्म कर दिया,
और कर लिया आदमी ने इस दुनिया को बस खुद की।

****

"सर्वे ऑफ इंडिया" एक नये दौर में

प्रवीण बिजल्वान
डिजीटाईजर

"आजादी से पैदल चलकर देश देशान्तर का सैर सपाटा कराया है।
जाग उठा अब देश हमारा नई तकनीक नवाचार को लाया है"

"सर्वेक्षण का पुरातन काल, अब डिजिटल रूप में आया है,
नये नवाचार के नये दौर में, नये भारत को अपनाया हैं"

"जारी रहेगा सर्वे हमारा, नई पीढ़ी क नये दौर में
मजबूत होगा देश हमारा, खोज तकनीकी के तौर में"

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः, की नीति को अपनाया है,
जाग उठा अब देश हमारा, नई तकनीक नवाचार को लाया है।

****

यात्रा संस्मरण

श्री अमरनाथ यात्रा

अरूण कुमार
अधिकारी सर्वेक्षक

प्रतिवर्ष श्री अमरनाथ यात्रा का शुभारम्भ 1 जुलाई से शुरू होकर 15 अगस्त, तक चलती है। हमने यात्रा के लिए रजिस्ट्रेशन J & K Bank से 4 जुलाई, के लिए बालटाल मार्ग द्वारा जाने के लिये करवाया। पंजीकरण फीस ₹100 है, पंजीकरण फार्म के साथ निम्नलिखित दस्तावेज आवश्यक है।

1.– पहचान प्रमाण पत्र एवं स्वस्थता प्रमाण पत्र।

2.– आरोग्य प्रमाण पत्र।
3.– तीन पासपोर्ट आकार के छायाचित्र।

मेरा श्री अमरनाथ यात्रा के लए यह पहला अनुभव था। लेकिन हमारे साथ एक ऐसा व्यक्ति भी था जो 6 बार यह यात्रा पूर्व में कर चुका था। उसके अनुभव का हमें भरपूर फायदा मिला।

यात्रा संस्मरण
श्री अमरनाथ यात्रा

श्री अमरनाथ यात्रा के लिए हम 05 लोगों ने प्लान बनाया। हमने श्री अमरनाथ यात्रा का शुभारम्भ 01 जुलाई 2019 को लगभग 6:00 बजे सांय देहरादून से प्रारम्भ किया। अगले दिन सुबह 2 जुलाई, 2019 को हम लोग लखीमपुर पोस्ट सुबह 4:30 को पहुँचे लखीमपुर पोस्ट में गाड़ी की चेकिंग की जाती है तथा जी०पी०एस० चिप लगाई जाती है। हम जम्मू पहुँचे जम्मू में भगवती नगर में आई०टी०बी०पी० का अमरनाथ यात्रियों के ठहरने के लिए शिविर कैम्प है। उस शिविर कैम्प में ए०सी० डोरमैटरी ₹60 प्रति व्यक्ति है तथा खाने पीने की मुफ्त व्यवस्था है। वहाँ भण्डारे चलते है। दिन में हमने जम्मू दर्शन किया तथा बाजार घूमें।

जम्मू में बहुत ही सुन्दर रघुनाथ मन्दिर है जो राजा रणवीर सिंह ने 200 वर्ष पूर्व बनाया था इसमे 33 करोड़ देवी देवताओं के चिंहित रूप है इस मांदिर में एक अद्भुत शिवलिंग है जो कि राजा कर्ण सिंह द्वारा बनवाया गया था इस शिवलिंग पर भगवान शिव गणेश जी तथा नंदी देवता के चित्र है सबसे नीचे चंद्रमा का चित्र भी है पंडित जी द्वारा इस मंदिर के शिवलिंग की पूजा कराई गई इसमें एक पारदर्शी शिवलिंग भी है। इस शिवलिंग पर जब दूध चढाया जाता है तो पारदर्शी शिवलिंग पर सामने से चंद्रमा का अक्स दिखाई पड़ता है तथा यह शिवलिंग स्फटिक धातु इस शिवलिंग पे भी पूजा पंडित जी द्वारा पूरे विधि विधान से कराई गई। इसके बाद हमने जम्मू शहर का भ्रमण किया। यहाँ से सभी गाड़ियों को सुबह 3 बजे कॉनवाई के साथ जिसमें सेना एवं आई०टी०बी०पी० के जवान हथियारों से लैस रहते है। उनके साथ निकलने का आदेश। जो भी गाड़ी कानवाई में शमिल होगी उनकी सुरक्षा जाँच जी०पी०एस० चिप के साथ शाम को ही चिन्हित कर दी जाती है। उसके बाद हम लोग सुबह लगभग 3:45 बजे कॉनवाई के साथ कड़ी सुरक्षा के बीच यहाँ से रवाना हुए।

बीच रास्ते में रामबाण में 9:05 बजे हमने नाश्ता किया। यहाँ हर तरह का स्वादिष्ट व्यंजन भण्डारे में उपलब्ध था। यह सभी भण्डारे स्वंयसेवी संस्थाओं द्वारा चलाये जाते है। सभी गाड़ियाँ जो कॉनवाई के

काफिले साथ चलेगी सभी एक साथ रूकेगी। सभी गाडियों की फोटोग्राफी नम्बरिंग बीच–बीच में सेना एवं आई०टी०बी०पी० के जवानों द्वारा की जाती है।

कानवाई एन०एच०–44 से गुजरा एन०एच०–44, के साथ चिनाव नदी जाती हुई बड़ी सुन्दर प्रतीत होती है। चिनाव नदी का उद्‌गम लारा दर्रे से होता है।

12:20 बजे हमने भण्डारे में मध्याहन् भोजन किया। इस जगह का नाम शैतानी नाला है। यहाँ पर खाना बहुत ही स्वादिष्ट था। तथा अलग–अलग प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन इन भण्डारों में उपलब्ध थे।

बीच में हमने जवाहर सुरंग को भी पार किया जिसकी लम्बाई 2.85 किमी० थी। कॉनवाई ने डलझील श्री–नगर शहर को 15:45 बजे पार किया। डल–झील का नजारा गाड़ी में से बहुत ही सुन्दर था। कानवाई काफिले में गाड़ी रोककर रूकना निषेध था। इसलिए डलझील गाडी में से ही देख पाएं। हम लोग बालटाल लगभग सांयः 6 बजे पहुँचे। बालटाल शिविर काफी बड़ा था। पूरा क्षेत्र सेना एवं आई०टी०बी०पी० के नियंत्रण में होता है। इसके अंदर पार्किंग प्लेस, तम्बू, बाजार, भण्डारे सब है तथा यहाँ काफी ठण्डा है, पहाड़ों पर भी अच्छी खासी बर्फ दिखाई दे रही थी। हमने ₹1500 दो दिन के लिए एक टैण्ट लिया टैण्ट में गर्म कपड़े, गर्म पानी ₹50प्रति बालटी उपलब्ध है। खाने–पीने के लिए बड़े ही सुन्दर भण्डारे सजे हुए थे।

अगले दिन सुबह 4 जुलाई को हमने लगभग 5 बजे अपनी यात्रा आरम्भ की। बालटाल से अमरनाथ गुफा की दूरी 16 किमी है। हमने घोड़े से यात्रा की घोड़े का किराया ₹2600 प्रति व्यक्ति आना–जाना लिया। बालटाल से अमरनाथ गुफा तक हमें 6 घंण्टे लगे। रास्ता बहुत ही खतरनाक एवं चढ़ाई वाला था। बीच में भण्डारों में नाश्ता किया। लगभग 11:30 बजे हमने बर्फानी बाबा के दर्शन किये बर्फानी बाबा अपने पूर्ण रूप में लगभग 10 फिट ऊँचाई के शिवलिंग के दर्शन हुए। हमने कबूतर–कबूतरनी के जोडे का भी दर्शन किया। वहाँ का वातावरण काफी भक्ति पूर्ण था। दर्शन करने के बाद वही पर हमने भण्डारे में भोजन किया। तथा भोजन के बाद हम वापस बालटाल सांय 6:30 बजे पहुँचे। अगले दिन सुबह हम 6:00 बजे बालटाल से लेह–लद्धाख के लिए रवाना हुए। हम लगभग 7:30 बजे द्रास सैक्टर में पहुंचें। द्रास में हमने 8:00 बजे नाश्ता किया। 11:30 बजे हम लोग कारगिल पहुँचे। कारगिल में हमने ऑपरेशन विजय युद्ध स्मारक देखा। 1999 में कारगिल युद्ध में शहीद जवानों की याद में यह युद्ध स्मारक बनाया गया है। यहाँ पर शहीद जवानों के नाम, तोप के सैम्पल तथा युद्ध विमान के मॉडल भी रखे हुए है। यहाँ से हमे जवानो ने टाईगरहिल भी दिखाया। जिसको 1991 में कारगिल युद्ध में भारतीय सेना ने आतंकियों के कब्जे से मुक्त कराया था लेह से 20 किमी० पहले एन०एच०–1 पर एक चुम्बकीय पहाड़ी है। यहाँ यदि सडक पर कोई भी वाहन गियर से हटाये तथा खड़ा कर दे। तो गाड़ी अपने आप चलने लगती है। चुम्बकीय पर्वत के प्रभाव के कारण ऐसा होता है। हम लोग लेह सांय 6:00 बजे पहुँचे। यहां पहुँच कर हमने एक होटल बुक किया तथा पैंगोंग लेक जाने के लिए होटल से ही पंजीकरण कराया। पंजीकरण के लिए एक सरकारी पहचान पत्र देना होता है।

अगले दिन 06 जुलाई को हमने लेह स्थानीय क्षेत्र का अवलोकन किया। लेह, में दो तीन मोनार्क, म्यूजियम तथा राजा का महल है तथा उस दिन लेह में दलाईलामा के जन्मदिवस पर एक विशाल मेले का आयोजन भी हो रहा था।

लेह मे हमने वह विद्यालय भी देखा जहाँ 3 ईडियट फिल्म की शूटिंग हुई थी। लेह से पेंगोंग लेक जाने के लिए टैक्सी हमने होटल से ही बुक की जिसका आने जाने का चार्ज ₹9000 लिया गया। लेह से पेंगोंग लेक लगभग 160 किमी० है। लेह से पेंगोंग लेक का रास्ता बहुत ही खतरनाक, ऊबड़–खाबड़ है। तथा पूरा क्षेत्र हिम से आच्छादित है। यहाँ पर दो तीन दर्रे भी पड़ते है। चंगला दर्रो की ऊँचाई 5360 मी० है। यहाँ हम 7:30 बजे पहुँचे यहाँ पर ऑक्सीजन काफी कम है। इसीलिए हमारे साथी की तबियत खराब हो गई थी जिसके लिए ऑक्सीजन पम्प, सेना ने दिया। सेना के कैम्प बीच–बीच में मिलते रहते है। सेना के कर्मचारी काफी मददगार रहते है। 9:00 बजे हमने दरबक में नाश्ता किया। ऐसे दुर्गम स्थान पर, होटल में खाने की कीमत साधारण ही थी।

पेंगोंग झील हम लगभग 11:00 बजे पहुँच गये थे। यहाँ का दृश्य बहुत ही सुन्दर एवं मनमोहक है। पहाड़ियों के बीच 120 किमी० लम्बी झील बहुत ही सुन्दर है इस झील का 60 प्रतिशत भाग लगभग 75 किमी चीन में पड़ता है। तथा 40 प्रतिशत भाग 45 किमी भारत में है। इस झील का पानी खारा है यहाँ पर हम लोग डेढ़ घंटे से दो घंण्टे रूके। यहां पर याक, 3 ईडियट वाला स्कूटर ₹50 प्रति फोटो के हिसाब में मोबाईल/कैमरा से फोटो लेने के लिए उपलब्ध है पैंगोंग झील से हम वापिस लेह लगभग सॉय 5:30 बजे पहुँचे।

07 जुलाई, सुबह 6:00 बजे हमने लेह से मनाली का रूख किया। लगभग 9:00 बजे डिबलिंग पहुँचे वहाँ पर हमने नाश्ता किया, ला छुंगला एवं रोहतांग दर्रा हमने पार किया। लगभग 11:30 बजे हम मनाली पहुँचे। मनाली में नाश्ता किया तथा मनाली घूमे।

लहोल–स्फीती, नहान, पोंटा साहिब होते हुए हम देहरादून पहुँचे। हमारी यात्रा काफी रोमांच भरी रही। कुल 10 दिन मे हमारी यात्रा सम्पूर्ण हुई।

—

दयानंद सरस्वती

अज्ञानी होना गलत नहीं है। अज्ञानी बने रहना गलत है।

कोई तब मूल्यवान है जब मूल्य का मूल्य स्वंय के लिए मूल्यवान हो।

वह अच्छा और बुद्धिमान है, जो हमेशा सच बोलता है, धर्म के अनुसार काम करता है और दूसरों को उत्तम और प्रसन्न बनाने का प्रयास करता है।

दुनिया को अपना सर्वश्रेष्ठ दीजिए और आपके पास सर्वश्रेष्ठ लौटकर आयेगा।

अगर मनुष्य का मन शान्त है, चित्त प्रसन्न है हृदय हर्षित है तो निश्चय ही यह अच्छे कर्मो का फल है।

अटूट

बलवन्त सिंह
सर्वेक्षण सहायक

1) बिना भाई के जब रावण हार सकता है,
और भाई के साथ भगवान श्री राम जीत सकते हैं।
तो हम..... इंसान किस घमंड में हैं। सदैव साथ
रहिये कोशिश करें कि परिवार न टूटें।

2) किस्मत ने जैसा चाहा वैसे ढल गये हम,
बहुत संभल के चले फिर भी फिसल गये हम,
किसी ने विश्वास तोड़ा तो किसी ने दिल,
और लोगों को लगा कि बदल गये हम.....

3) मोबाईल ने हमें तीन बाते सिखाई है,
(i) जो हमें अच्छा लगे उसे सहेज ले यानी सेव Save (संचय)
(ii) जिससे दूसरे खुश हो उसे बांटे यानी Forword (अग्रेसित)
(iii) जो किसी को अच्छा न लगे उसे हटा दे यानी Delete (हटाना)
जीवन में जो व्यक्ति इन बातों को ध्यान रखता है वही जीवन में खुश रह सकता है।

4) जीवन में कुछ भी स्थायी नहीं है इसलिए स्वयं को अधिक तनावग्रस्त न करें, क्योंकि परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी खराब हो बदलती जरूर है।

5) परिवार और समाज दोनों ही बर्बाद होने लगते हैं, जब समझदार मौन रहता है, और नासमझ बोलने लगता है।

****

सामान्य ज्ञान

ममता तोमर
वरिष्ठ रिप्रोग्राफर

- विश्व वन्यजीव संरक्षण कोष कहाँ पर स्थित है– स्विट्जरलैंड
- उस वेद का नाम जिसकी रचना गद्य एवं पद्य दोनों में की गई है– यजुर्वेद
- भारत सरकार द्वारा केन्द्र में 'पर्यावरण विभाग' की स्थापना कब की गई थी– 1980 में।
- सर्वाधिक ओजोन क्षयकारी गैस कौन सी है– क्लोरोफ्लोरो कार्बन
- कौन सी धातु बिजली की सबसे अच्छी चालक होती है– चाँदी
- मानव शरीर का सामान्य तापमान कितना होता है– 36.9 डिग्री सेल्सियस या 98.6 डिग्री फॉरेनहाइट
- आलमगीर के नाम से किस शासक को जाना जाता है– औरंगजेब
- साइमनकमीशन के विरूद्ध प्रदर्शन के दौरान किए गए लाठीचार्ज में किस प्रख्यात राजनेता की मृत्यु हो गई थी– लाला लाजपत राय
- मानव के द्वारा सर्वप्रथम कौन सी धातु प्रयोग में लाई गई थी– तांबा
- भारतीय राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा का डिजाईन किसने तैयार किया– पिंगली वेंकैया
- किस मुस्लिम शासक ने अपने सिक्के पर लक्ष्मीमाता की प्रतिमा बनाई थी– मुहम्मद गौरी
- वायुमंडल में नाइट्रोजन कितने प्रतिशत् है–78प्रतिशत्
- "सत्यमेव जयते" उक्ति कहाँ से ली गई थी– माण्डकोपनिषद्
- माहात्मा बुद्ध ने अपना उपदेश किस भाषा में दिया– पालि
- आग बुझाने के लिए कौन सी गैस का उपयोग किया जाता है– कार्बन डाइ ऑक्साइड
- नाटो की स्थापना कब हुई थी– नाटो की स्थापना 4 अप्रैल 1949 को की गई थी।
- राष्ट्रीय वन नीति के अनुसार कितने प्रतिशत् भू–भाग पर वन का होना अनिवार्य माना गया है– 33प्रतिशत्
- इंदिरा गाँधी वानिकी अकादमी कहाँ पर स्थित है– देहरादून
- सबसे प्राचीन काल से उगाया जाने वाला फल कौन सा है– खजूर

दिव्यांश नेगी,
कक्षा–05
पुत्र राकेश नेगी,

राष्ट्रीय भू–स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, देहरादून की वार्षिक गृह पत्रिका उज्याऊ अंक–5 का विमोचन

राष्ट्रीय भू–स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, देहरादून में हिन्दी पखवाड़ा वर्ष 2021 मे पुरस्कार वितरण समारोह

राष्ट्रीय भू–स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, देहरादून परिसर में गणतंत्र दिवस समारोह

राष्ट्रीय भू–स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, देहरादून परिसर में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह

राष्ट्रीय भू–स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, देहरादून परिसर में स्वतंत्रता दिवस समारोह

राष्ट्रीय भू–स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, देहरादून परिसर में स्वतंत्रता दिवस समारोह

राष्ट्रीय भू–स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, देहरादून परिसर में राजभाषा प्रतिज्ञा लेते अधिकारी एवं कर्मचारी

राष्ट्रीय भू–स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, देहरादून परिसर में सतर्कता एवं जागरूकता की शपथ लेते अधिकारी एवं कर्मचारी

राष्ट्रीय जल विज्ञान परियोजना–C.O.R.S. प्रशिक्षण

अपर महासर्वेक्षक का विदाई समारोह

राष्ट्रीय भू–स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, देहरादून में वर्ष 2021–2022 में आयोजित विदाई समारोह

विदाई समारोह, श्री नरेन्द्र सिंह नेगी, वरिष्ठ रिप्रोग्राफर

विदाई समारोह, श्री नरेन्द्र सिंह नेगी, वरिष्ठ रिप्रोग्राफर

विदाई समारोह, श्री नरेन्द्र सिंह नेगी, वरिष्ठ रिप्रोग्राफर

विदाई समारोह, श्री नरेन्द्र सिंह नेगी, वरिष्ठ रिप्रोग्राफर

विदाई समारोह, श्रीमति मंजू रावत, मानचित्रकार श्रेणी–1

विदाई समारोह, श्रीमति मंजू रावत, मानचित्रकार श्रेणी–1

राष्ट्रीय भू–स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, देहरादून में वर्ष 2021–2022 में आयोजित विदाई समारोह

विदाई समारोह, श्रीमति मंजू रावत, मानचित्रकार श्रेणी–1

विदाई समारोह, श्रीमति मंजू रावत, मानचित्रकार श्रेणी–1

विदाई समारोह, श्री सतीश कुमार राठोर, कार्यालय अधीक्षक

विदाई समारोह, श्री सतीश कुमार राठोर, कार्यालय अधीक्षक

विदाई समारोह, श्री सतीश कुमार राठोर, कार्यालय अधीक्षक

विदाई समारोह, श्री सतीश कुमार राठोर, कार्यालय अधीक्षक

आई0 एन0 सी0 ए0 कार्यशाला वर्ष 2022

राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिता में राष्ट्रीय भू–स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, देहरादून की भागीदारी

सी0एस0आई0आर0 क्रिकेट टूर्नामेंट जीतने के बाद विजयी मुद्रा

ऑल ईंडिया सिविल सर्विसेज क्रिकेट टूर्नामेंट, दिल्ली वर्ष 2022 में राष्ट्रीय भू–स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, देहरादून की भागीदारी

विनिंग ट्राफी–सी0एस0आई0आर0 क्रिकेट टूर्नामेंट

सी0एस0आई0आर0 क्रिकेट टूर्नामेंट में अंर्तराष्ट्रीय धावक दूती चंद के साथ विभागीय टीम

डी0 एस0 टी0 की टीम के साथ प्रतिभाग करते राष्ट्रीय भू–स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, देहरादून की टीम, क्रिकेट जीतने के बाद विजयी मुद्रा– भुवनेश्वर

उत्तराखंड की दिव्यांग क्रिकेट टीम को टीम जर्सी वितरित करते श्री सतेंद्र सिंह रावत, मानचित्रकार श्रेणी–1

ग्लोगी उत्तराखण्ड की पहली जल विद्युत परियोजना

1900 ई0 में मसूरी की बढ़ती आबादी के कारण पानी की कमी की आपूर्ति के लिए तत्कालीन सैनेटरी इंजीनियर मि० ऐकमेन ने कैम्पटी फॉल से बिजली उत्पादन और पावर पंप द्वारा लण्डोर तक पानी सप्लाई की दोहरी योजना बना कर प्रस्तुत की थी। परंतु टिहरी के राजा कैम्पटी क्षेत्र में इस निर्माण के लिए सहमत नही थे अतः विकल्प के रूप में भट्टा फॉल का चयन किया गया। योजना यह थी की मसूरी मॉल से दक्षिण की तरफ दो मील की दूरी पर भट्टा गाँव है जहाँ दो पहाड़ी जल धाराएं आकर मिलती है। इसके नीचे पानी को रोककर हैड बनाया जाये और यहाँ से लोहे के पाइप द्वारा पानी को अपेक्षित बल के साथ उत्पादन केन्द्र तक छोड़ा जाये। बिजली का यह उत्पादन केन्द्र ग्लोगी में होगा जो हैड से एक मील की दूरी वाली ढलान पर था। इस स्कीम का एक भाग मसूरी में पानी की सप्लाई के लिए तथा दूसरा बिजली के प्रकाश के लिए इस्तेमाल करने की योजना थी। इस प्रकार ग्लोगी जल विद्युत केन्द्र की वर्ष 1907 में स्थापना हुई। ग्लोगी पावर हाउस के निर्माण में 600 मजदूरों ने काम किया। लंदन से पानी के जहाजों से मशीने हिंदुस्तान आई। वहां से रेल मार्ग द्वारा देहरादून लाई गई। देहरादून से गढ़ी डाकरा के रास्ते होते हुए बैलगाड़ियों खच्चरों से ग्लोगी निर्माण स्थल तक पंहुचाई गई थी। मई 1909 में ग्लोगी पावर हाउस ने अपनी पूरी क्षमता के साथ काम करना शुरू कर दिया तथा 24 मई 1909 में 'एम्पायर डे' के अवसर पर ग्लोगी पावर हाउस से उत्पादित विद्युत ऊर्जा से पहली बार मसूरी में बिजली के बल्ब चमकने लगे।

लाखामंडल

प्रकृति की वादियों में बसा हुआ यह स्थान भारत देश के उत्तराखंड राज्य के देहरादून से 128 किमी की दूरी पर स्थित यमुना नदी के तट पर बर्नीगाड़ नामक जगह से लगभग 4–5 किमी0 दूरी पर स्थित एक गांव है। दिल को लुभाने वाला यह स्थान गुफाओं और भगवान शिव के मंदिर के प्राचीन अवशेषों से घिरा है, माना जाता है कि इस मंदिर में प्रार्थना करने से व्यक्ति को पापों से मुक्ति मिल जाती है। यहाँ पर खुदाई करते वक्त विभिन्न आकार के और विभिन्न ऐतिहासिक काल के शिवलिंग मिले हैं। इस जगह को लेकर एक और मान्यता है। ऐसा कहा जाता है यह वही जगह है जहाँ पर पाँडवों को जीवित जलाने के लिए उनके चचेरे भाई कौरवों ने लाक्षागृह का निर्माण करवाया था। इसी के साथ ऐसी मान्यता भी है इस जगह पर स्वंय युधिष्ठिर ने शिवलिंग स्थापित किया था। इस शिवलिंग को आज भी महामंडेश्वर नाम से जाना जाता है।